

Barcode : 99999990243078

Title -

Author - -

Language - hindi

Pages - 75

Publication Year - 1927

Barcode EAN.UCC-13



लो यह देखा क्या है !!!

प्रिय सुहृद्गर्ग ! वर्तमान समयमें अनेक प्रकारके तन्त्रशास्त्र सम्बन्धी विज्ञापन जिधर तिधर देखनेमें आते हैं, परन्तु वास्तवमें वे सब ग्रन्थ वैद्यकके सिद्ध होते हैं । यथार्थ तन्त्र उसीको कह सकते हैं जिससे उभयत्र साधुवादकी प्राप्ति हो । जब भगवान् भूतनाथने समस्त सिद्ध मन्त्रोंको कील दिया था उस समय केवल सावर मन्त्रही कीले जानेसे मुक्त रहे थे । सावर मन्त्रोंके अतिरिक्त अन्य मन्त्रोंका कलि-युगमें सिद्ध होना दुस्तरही नहीं, वरु असम्भव है, परन्तु सावर मन्त्र तत्काल अपनी सिद्धिका परिचय देते हैं, । इन मन्त्रोंका जप करके सिद्ध करनेकी विशेष आवश्यकता नहीं; लिखा है कि--

अनमिल अक्षर अथ न जापू ।

प्रकट प्रभाव हमेशा प्रतापू ॥

जिनको असली सावर तन्त्र लेनाहो, पुस्तक हाथमें थामतेही सिद्ध बन जानेकी कामना हो अथवा सच्चे सिद्ध बनकर इस लोकमें द्रव्य और यश एवं असुत्रमें मोक्षकी कामना हो तौ इसी असली ग्रन्थको खरीदो ॥

संशोधक: टिप्पणीकारकश्च-

पण्डितमण्डल कार्यालय

२७ जौलाय १८९८

ब्रजरत्नभट्टाचार्यः

पटुवरगंज,

मुरादाबाद.

भूमिका ।

प्यारे पाठको ! आज आपकी चिरकालीन आशा पूर्ण होगई, जिस अमूल्य पुस्तकका मिलना आशातीत समझा जाता था आज वह अमूल्य रत्न हम दोनों हाथसे लुटा रहे हैं । समस्त यन्त्र मन्त्र और तन्त्रोंको जिस समय महादेवजीने कील दिया था उसके अनन्तर सावरमन्त्र निर्माण करे थे । सावर मन्त्र कितने सुसाध्य हैं कहनेकी तो कोई आवश्यकता नहीं परन्तु हमारे पाठक इतनेहीमें समझ जायँगे कि सावर मन्त्रोंको दो चार बार पढ़कर प्रयोग करनेसे सब प्रकारकी कामनायें सिद्ध होजाती हैं । मारण, मोहन, वशीकरण आदिका साधन भूत प्रेतादिकोंकी बाधाको दूर करना, सर्प आदिक बड़े २ विपैले जीवोंका विष दूर कर उनको वशमें कर लेना इत्यादि विषयोंमेंसे कौनसे ऐसे विषय हैं कि जिसको मनुष्य इन सावरमन्त्रके द्वारा वातकी वातमें सिद्ध न करसकता हो ।

१ इसमें सब मन्त्रोंकी विधि मन्त्रोंके नीचे लिखी गई है और जिनकी विधि कुछ नहीं लिखी है उन मन्त्रोंको ग्रहणमें जपकर सिद्ध कर लेना चाहिये । और यंत्रोंमें जहां कहीं देवदत्त लिखा है वहां उसका नाम लिखना चाहिये जिसके ऊपर प्रयोग करना हो ।

२ मन्त्रशास्त्रोंको महादेवजीने कील दिया है उनका प्रचार देखकर हमने इस परम गोप्य ग्रन्थका प्रकाश करना उचित समझा क्योंकि उन कीलित मन्त्रोंका अनुष्ठान करनेसे वे सिद्धि होने दुस्तर हैं, इसी कारण मनुष्योंकी मन्त्रशास्त्रमें अविश्वाससा हो गया है । हमारा मन्तव्यभी मन्त्रशास्त्रको गुप्तही रखनेका है परन्तु मन्त्रशास्त्रका गौरव घटता देखकर यह पुस्तक प्रकाश की गई है अन्तमें हम उन तांत्रिकोंसे जो मन्त्रशास्त्रके ग्रन्थोंको गुप्त रखना उत्तम समझते हैं क्षमा करनेकी प्रार्थना करते हैं क्योंकि जगत्प्रसिद्धमहात्मा कामराजजी शाक्तके प्रधान शिष्य दिगम्बर कालिकानन्दजीसेभी छापनेकी आज्ञा लेली है और यह विषय तांत्रिक सभासेभी निश्चय हो गया है कि मन्त्रशास्त्रकी पर्यादा रखनेको एक ग्रंथ अवश्य प्रकाशित होना चाहिये इसी कारण हम क्षमा प्रार्थना करते हैं कि कोई महाशय हमारे ऊपर किसी प्रकारका दोषारोपण न करे ।

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
“ लक्ष्मीवैकटेश्वर ” छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

बृहत्सावरतन्त्रकी विषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
मंगलाचरण	१	टोना झारेके प्रत्यक्ष करेका मन्त्र	२०
वशीकरणमन्त्र	२	मन्त्र छोझारेके टोना चुरैलके	२१
छीवशीकरण	३	मन्त्र ज्वर झारनेका	२२
ग्रेत वरावेका मन्त्र	७	मन्त्र तृज्वर झारनेके	२३
आत्मफूंकन मन्त्र	११	छीवशीकरणमन्त्र	२४
बाबाआदममन्त्र	१२	छीवशीकरणयन्त्र	२५
मन्त्रभूतढायिनियांगलसर्वके		आंखि झारनेका मन्त्र	२६
झारेका मन्त्र	१३	उठी आंखि झारनेका मन्त्र	२७
देवीमन्त्र	१४	रतौंधी झारनेका मन्त्र	२८
वाघ वरावेका मन्त्र	१५	रस्सा झारनेका मन्त्र	२९
सूचीबन्धनमन्त्र	१६	दांतव्यथा झारनेका मन्त्र	३०
पहुंचा छेदनेका मन्त्र	१७	सम्पूर्ण शिरोव्यथाके मन्त्र	३१
गागर छेदनेका मन्त्र	१८	मन्त्र हुक झारनेका	३२
धनुर्वंधनमन्त्र	१९	कर्णमूल मन्त्र	३३
सर्वधारबंधनमन्त्र	२०	घीनहीका मन्त्र	३४
धार बांधनेका दूसरा मन्त्र	२१	थनैली झारनेका मन्त्र	३५
अग्निस्तम्भनमन्त्र	२२	ममरधी झारनेका मन्त्र	३६
बीग वरावेका मन्त्र ...	२३	अंडवृद्धिका मन्त्र	३७
मिश्रित मन्त्र	२४	मृगीका मन्त्र	३८
राजवशीकरण	२५	खेत नीके उपजे और रक्षा	३९
मिश्रित मन्त्र	२६	रहै इसके मन्त्र	४०
पाषाण वरावेका मन्त्र	२७	फूकावागीका मन्त्र	४१
तालत्रयेण सर्प वरावेका मन्त्र	२८	पोतरहंडी व हुक और	४२
सूकर मूस वरावेका मन्त्र	२९	घेढमोर झारनेका मन्त्र	४३
केवल मूस वरावेका मन्त्र	३०	मन्त्र दादका	४४
शस्त्रास्त्र वरावेका मन्त्र	३१	मन्त्र रिसाके पानी परोरि पियाइ	४५
अग्निस्तम्भनमन्त्र	३२	कुकुर काटे तो झारनेका मन्त्र	४६
कराही थांभेका मन्त्र	३३	मन्त्र शींगी मछारिका	४७
प्रसङ्गादग्निमुक्तारनमन्त्र	३४	मन्त्र कठवेगुचीका	४८
तेलस्तम्भनमन्त्र	३५	मन्त्र बीछी झारनेका	४९
टोना झारेका मन्त्र	३६	बीछुके विष चढानेका मन्त्र	५०

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
तत्रादौ सांप झारनेका मन्त्र	 ३६	शत्रुन्धरयंत्र	 ५२
ज्वरबंधन झारनेका मन्त्र	 ३७	ज्वरमंत्र	 ॥
लहरि जगानेके मन्त्र	 ॥	गर्भस्तम्भन मन्त्र	 ५३
शत्रुपादत्राणमारण मन्त्र	 ३८	भूतनाशन मन्त्र	 ॥
शत्रुके अवेश करनेका मन्त्र	 ३९	डाकिनी नजर दूर करनेका मन्त्र	॥
अनुभूत मन्त्र	 ॥	उच्चाटन मन्त्र	 ॥
वशीकरण प्रयोग	 ४०	सुखप्रसव यंत्र	 ५४
ध्यानम्	 ॥	राक्षसनाशनमन्त्र	 ॥
मारण प्रयोग	 ४१	मसान मन्त्र	 ॥
मारण यन्त्र	 ॥	मन्त्रप्रयोग	 ५५
मन्त्र वैरी खसावेका	 ४२	शिरका दर्द झाडनेका मन्त्र	 ॥
बन्धखलास मन्त्र	 ॥	मनोरथसिद्धि मन्त्र	 ॥
किंचित् सुप्रयोग	 ४४	शत्रुमोहनी यंत्र	 ५६
मन्त्र वनझारिका	 ॥	सब प्रकारके रोग दूर होनेका यंत्र	॥
मन्त्र किरहा झारिका	 ॥	काममन्त्र	 ५७
गो महिष्यादि दुग्धवर्द्धनमन्त्र	 ४५	चामुण्डामन्त्रोद्धार	 ५८
स्त्रीणां गभधारणविधि वेदोक्तमन्त्र	॥	चामुण्डामन्त्र	 ॥
मन्त्र सावर	 ॥	चामुण्डाध्यान	 ॥
गर्भरक्षाके मन्त्र	 ४६	विधि	 ५९
प्रसूतिका मन्त्र	 ॥	कामेश्वरमन्त्रोद्धार	 ॥
गर्भ रक्षा गंडाबंधन	 ॥	कामेश्वरमन्त्र	 ॥
सर्वशूलके मन्त्र	 ४७	ध्यान	 ॥
गंडा बालकरक्षाके विधि	 ४८	विधि	 ६०
घोषारक्षक मंत्र	 ॥	स्थाननिर्णय	 ६१
मन्त्र गंडापूरेका	 ॥	वशीकरणप्रयोग	 ॥
मन्त्र पानीफूँके पिआवेका	 ४९	वशीकरणयंत्र	 ६२
बालक झारनेका मन्त्र	 ॥	प्रेतविमोचनविधि	 ॥
माक्षिकासजीवनी मन्त्र	 ॥	प्रेतविमोचनबुदुनवत	 ६३
प्रेत चढानेका मन्त्र	 ५०	अनेक यंत्र	 ६४
मोहिनी यन्त्र	 ५१	दाढके दर्दका मन्त्र	 ६५
शत्रुकी छाती फटनेका यंत्र	 ॥	यन्त्र	 ६६

इति अनुक्रमणिका समाप्त ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



शिवोक्तं

बृहत्सावरतन्त्रम् ।

[विधानसहितं]

पार्वत्युवाच ।

भगवन् मम प्राणेश सर्वलोकशिवंकर ।

बृहत्सावरतन्त्राणि वक्तुमर्हस्यशेषतः ॥

पार्वतीजी बोलीं, हे हमारे प्यारे प्राणनाथ ! हे
समस्त संसारके मंगलकर्ता ! हे भगवन् ! हे महा-
देव ! आप सम्पूर्ण बृहत्सावरतन्त्र यंत्र और
मन्त्रोंको मुझसे वर्णन करिये ॥ १ ॥

महादेव उवाच ।

वक्ष्याम्यहं सावराणि मन्त्रतन्त्राणि पार्वति ।

सर्वकामप्रसाधानि शृणुष्वभावहिता प्रिये ॥ २ ॥

महादेवजी बोले, हे प्यारी पार्वति ! जितने
सावरमन्त्र और तन्त्र हैं, जिनसे कि समस्त कामना

सिद्ध हो जाती है, उनको हम तुमसे कहते हैं
तुम सावधान चित्तसे श्रवण करो ॥ २ ॥

तत्रादौ वशीकरणमंत्रः ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनायत्रिपु-
रवाहनाय । असुंकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥
इस मंत्रको सिद्ध योगमें १०८ बार जपे और
सुपारी पटके दे तो वश्य होता है ॥

स्त्रीवशीकरण ।

ॐ नमो कटविकटघोररूपिणी असुंकं मे वश-
मानय स्वाहा ॥

प्रथम इस मंत्रको ग्रहणमें १०००० बार जपे
फिर रविवारको इससे अभिमन्त्रित करके भोजन
करे और भोजन करते समय जिसे वशमें करना
चाहे उसका नाम लेता जावे तो वह शीघ्र वशी-
भूत होती है ॥ २ ॥

अन्यच्च ।

ॐ चामुण्डे जय २ वश्यंकरि जय २ सर्व-
सत्वात्मनः स्वाहा ॥

इस मंत्रको १०००० बार जपे फिर रविवार या

पाठकोंको ध्यान रखना चाहिये कि जहां “असुक” लिखा हो वहां
व्यक्तिका नाम लेना चाहिये जिसके ऊपर प्रयोग करना है ॥

भौमवारको इस मन्त्रसे पुष्प अभिमन्त्रित कर
जिसे दिया जायगा वह अवश्य वश होगा ॥

अन्यच्च ।

ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुखरंजनि
सर्वेषां महामाये मातंगे कुमारिके नन्द २ जिह्वे
सर्वलोक वश्यकरि स्वाहा ॥

इसका १०००० जप करनेसे यह मंत्र सिद्ध होता है ॥

श्वेतापराजितामूलं चन्द्रग्रस्ते समुद्धृतम् ।

अंजिताक्षो नरस्तेन वशीकुर्याज्जगत्रयम् ॥ १ ॥

ताम्बूलं रोचनायुक्तं तिलकेन जगद्भ्रशम् ।

ताम्बूलेन प्रदातव्यं भोजने पानमेव च ॥ २ ॥

शिलारोचनताम्बूलं वारुणीतिलके कृते ।

संभाषणेन सर्वेषां वशीकरणमुच्यते ॥ ३ ॥

शिरोनिवेष्टितं कृत्वा तेनैव तिलकं कृतम् ।

अदृष्टं तं न पश्यन्ति नार्यो वा पुरुषाश्च वा ॥ ४ ॥

ग्राह्यं शुक्लत्रयोदश्यां श्वेतगुंजां समूलकम् ।

ताम्बूलं च प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥ ५ ॥

चन्द्रग्रहणके समय श्वेत विष्णुकान्ताकी जड

लेकर उसका अंजन नेत्रोंमें लगानेसे निःसंदेह त्रिमु-

बन वशीभूत होता है ॥ १ ॥ ताम्बूलमें गोरोचन

मिलाकर तिलक करनेसे अथवा ताम्बूलके साथ या

भोजनमें मिलाकर भक्षण करा देनेसे जगत् वशीभूत होता है ॥ २ ॥ मनसिल, गोरोचन और ताम्बूल इन तीनोंको मिलाकर तिलक लगावे तो तिलक लगाने-वाला जिससे संभाषण करे वह वशीभूत होता है ॥ ३ ॥ शिर निवेष्टित करके तिलक करे तो उससे अदृष्ट हो जावे उसे कोई स्त्री पुरुष नहीं देख सके ॥ ४ ॥ शुक्ल-पक्षकी त्रयोदशीको सफेद घुँघुचीको जडसहित लेके पानके साथ देनेसे सब लोक वश हो जाते हैं ॥ ५ ॥

अन्यदपि ।

या अमीन या फामीन हमारे दिलसे फलानेका दिल मिला दे ॥

जिसपर मंत्र चलाना हो उसके समुख अग्निके निकट बैठके उसे गूगल लोबान धूप दिखावे और जब उसकी दृष्टि उस धूपके ऊपर पड़े तब उसे मंत्र पढ़ अग्निमें गिरा देवे । इस प्रकार २१ बार होम करे तथा ७, १४ या २१ दिन इसीतरह होम करे तो वह तत्काल वश होगा । यह मन्त्र स्त्रियोंके ऊपर अपना प्रभाव शीघ्र ही उत्पन्न कर देता है ।

अन्यच्च ।

पिंगलायै नमः ।

इस मंत्रका २०००० जप करे ।

भ्रमरस्य पक्षयुगं शुक्रमांससमन्वितम् । स्वानामिकारुधिरं च कर्णमूलं यं खादयति स वश्यो भवति ॥ ६ ॥

दोनों पक्षसहित भ्रमर व शुक्रमांस एकत्रित करके अपनी अनामिकांगुलीके रुधिरमें कानका मूल मिलाकर जिसको भक्षण कराया जाय वह अवश्य ही वश होता है ॥ ६ ॥

अन्यच्च ।

ॐ हुं स्वाहा ।

कृष्णापराजितामूलं ताम्बूलैः समन्वितम् ।

अवश्यं वै स्त्रियो दद्यात् वश्या भवति नान्यथा ७ ॥

काली विष्णुकान्ताकी जड़ ताम्बूलमें मिलाकर “ ॐ हुं स्वाहा ” इस मंत्रसे अभिमन्त्रित कर जिस स्त्रीको भक्षण कराया जाय वह निःसन्देह वश होगी ॥ ७ ॥

अन्यच्च ।

ॐ पिशाचरूपिण्यै लिंगं परिचुम्बयेत् । नागं विसिंचयेत् । अनेन मंत्रेण यस्य नाम्ना एकविंशतिवारं प्रातः मुखं प्रक्षालयेत् । अथवा जलमभिमन्त्र्य ददाति स वश्यो भवति ॥

अन्यच्च ।

ॐ नमो भगवति पुर २ वेशनि पुराधिपतये
सर्वजगद्धयंकारि ह्रीं भै ॐ रां रां रं रीं क्लीं
वालौसः पंचकामबाणसर्व श्रीसमस्तनरना-
रीगणं सम वश्यं नय नय स्वाहा ॥

इस मंत्रको १६ बार पढ़के अपने मुखके ऊपर
हाथ फेरकर जिधरको देखे उधरके लोक वश्य
होते हैं ॥

अन्यच्च ।

ॐ नमो भगवति चासुण्डे महाहृदयकंपिनि
स्वाहा ॥

इस मंत्रसे २१ बार बीडेको अभिमंत्रित करके
जिसे दिया जाय वह बश होगा ॥

अन्यच्च ।

कुं क्लीं ह्रीं नमः ।

इस मंत्रका तीनों समय १००० जप करे तो
पातालवासी वशमें होते हैं । १०००० हजार जप
करे तो देवता वशमें होते हैं । १००००० जप करे
तो त्रिलोकी वशमें हो जाती है ॥

अन्यच्च ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके सर्वान् मम वश्यं
कुरु कुरु सर्वान् कामान् मे साधय २ । अनेन
मन्त्रेण यस्य नाम्ना एकविंशति वारं प्रातः मुखं
प्रक्षालयेत् । अथवा जलमभिमन्त्र्य ददाति स
वश्यो भवति ॥

प्रेत वरावेका मंत्र ।

बांधो भूत जहां तु उपजो छाड़ो गिरे पर्वत चढाइ
सर्ग दुहेलीपृथिवी तुजमिझिलिमिलाहि हुंकारे हनुं-
वंत पचारइ भीमा जारि जारि जारि भस्म करे
जों चांपेसीउ ॥

आत्मफूंकन मंत्र ।

ॐ मुरतोंका गंडा अष्ट वेताल आठों वायु तीसो-
रहसे छेद भेदकी ज्ञानमो रंगे नकरुद्यामो रमा नारा-
यणी सप्त पाताल जानि मोर काज मोहिसाडारे तइ-
थिला विकिटार आस आस विकिटार तो सोरषीमो
गोरषी कारसी आकार बीज गोरषी वज्र करथिवौ ॥

बाबाआदममंत्रः ।

गुरु सत्यं विस्मिह्लाहका पूज्योमा आवनकार
आदि गुरु सृष्टिकरतार वेद वहर तारांहि एकी आइ
युग चारि तीन लोक वेद चारि पांचों पांडव छव

मारण सात समुद्र आठ वसु नव ग्रह दश रावण
 रथारह रुद्र बारह राशि तेरहमोल चौदह शोक पंद्रह
 तिथि चारि खानि चारि वानि पाँच भूत चौरासी
 आत्मा लाषति अथानि अष्टकुली नाग तैतीसकोटि
 देवता आकाश पाताल मृत्यु लोक रात दिन पहर
 घरी दण्ड पल विपल महारथ साषिधरभैहौ अब जो
 कछु फलानेके पीरा देव दानव भूत प्रेत राखी सुजाबु-
 विनाबु किताकराधादितावा क्षागाठिमुठिरषणी मु-
 खणी विलनी फोठौरीगद्धहीनीनाईकपोलाइअधौगी
 करणमूलवायुमूलुणसुरूननहरूवागडहरूवाजगरहू
 करतपीतमूत्रकुक्षडाढारहप्रमेहगोलाफलीहानहरू-
 आअहोगासोगाअर्धशीशी कुटीलुतीबुवारीमिरगी
 कमलवांड हंडी आनुवाबुहथेलगंडक्रवायुचोटफेट-
 दिताकितालापालगायापरपितीलंघाउलंघावाटघाट
 बाहर निसार पसार सांझ सकार कौनहु प्रकार
 होइ हाडउदवार चामनाडी अर्द्धअंगजहारूसी
 दोहाइसलेमानपैगम्बरकी तुरन्त विलाही पीनजाही
 नातरु सवा लाख पैगंबरकी वज्रथाप नवनाथ
 चौराशी सिद्धिके सराप शेषसरपूदी अहि आपीर
 मनेरीकी शक्ति बाबा आदमकी भक्ति जरिभरम्म
 होइ जाय जाहि निहिनिषद्धजाहि जाइ पिंड कुशल
 दोष फिटु फिटु स्वाहा ॥

मंत्रभूतडाइनियांगलसर्वकेशारेकामंत्र ।

जैसे कैलोमाकार्य सरूपे करिकरिवो न करो
वली लते राम लक्ष्मण सीतेया कार कोटि २ आज्ञा ।

इस मंत्रसे भूत डाइनियांगल नाल नाईको
झाडा देनेसे बाधा दूर होती है ॥

देवीमंत्र ।

ॐ रुनुं इडुनुं इमृत मारातं देवी ओरंपर तारा
वीरमान्यो वीर तोन्यो हांक डांक महिमथन करण-
जोग भोग जोग धर छतीश नक्षत्र धर सर्प पति
वासुकी धर सप्तब्रह्मांडे पति ब्रह्माके छायाधौ देवीधौ
देवताधौ डाइनियधौ गुरुराणाधौ भूतधौ प्रेतधौ धरधर
मांचंडी बीजकरुवालपंडी धौर्यवागुटिनां य दाददली
इमानको चलंते केके जाते आर रेवीर भैरवी काम
रूप कामचंडी धर धर वाकी महा काख्य करे
मडरु मारौ कुकी धर वारण धरौवलीते ते कामरु
कामचंडीइटमाया प्रसरणि कोटि कोटि आज्ञा
देवी रामचंडी बीजे चलिषंडी चौदिगे ऐरलदेवी
वसिलाकिमांडि चांडिचंद्र चमैकिले सूर्यदरिल ऐर-
लदेवी हराहरांपारि सुखिला कीटरे जीवो परांद्रिवा-
हंते खप्पर दाहिने हाथे छुरि ऐरलादेवी अवरतारि
डाइनि बांधो चुरइलि बांधु गुनीबांधु मोरा बांधु

मसानी बांधु मुनिया नासुनी आवे गरणि आंवुलावे
 रांडे माला डांडे जीवताडांडे हसै खेलै भारिवन
 झारो बलिते ते ते कामरू कामचंडि कोटिश आज्ञा ॥

वाघ बरावेका मंत्र ।

बैठी बठा कहां चलयौ पूर्वदेश चलयौ आंखि
 बांध्यौ तीनों कान बांध्यौ तीनों मुंह बांध्यौ मुंहकेत
 जिह्वा बांध्यौ अधौ डांड बांध्यौ चारिउ गोड बांध्यौ
 तेरी पोछि बांध्यौ न बांध्यौ तौ मेरी आन गुरुकी
 आन वज्र डांड बांध्यौ दोहाई महादेव पार्वतीके ।

यह तीन बार पढ़के चार कंकर चारों तरफ
 डारके बीचमें बैठे ॥

अन्यच्च ।

ॐ सत्यमाता शंकरपिता शंकर किलड चारिउ
 दिशा जहां २ मैं शंकर जाइ तहां २ मेरो किंकर
 जाइ जहां जहां मेरी दीठि तहां तहां मेरी मूठि जहां
 जहां मेरी नादको शब्द सुनि आवे हो नरसिंहवीर
 माताबाघेश्वरीको दूध हराम कर कहौ कवन २
 किलोवानपुर्वा न पुंगली और शार्दूल केशरि तेंदुवा
 सोनहार अधिआगाधिया अटिआर दूदि आर
 हरिआर काठि पठि पराधिता चलि घेरिये ते नहि
 आरे अवनि किलौ नारसिंहवार किलै कहु कवन २

किलौगाइका जाया भद्र सिक जाया भेडीका
जाया घोडीका जाया छेरीका जाया दुइयावचौ
पावक घाउ लागइ शिव महादेवको जटाके घाव
लागे पार्वतीके वीर चूके हाके हनुमन्त बरावे
भीमसेनि मन्त्रे बाँधे जो दाये सीम ॥

अन्यच्च ।

आरापुरवारा परवतपरवारी जहाँ बोइक पसारी
जाको तेगौरानी रानी ताकी बनाई जारीतिमें बाँधौ
बाघ बोलाई एही वन छाँडि दूसरे वन देखि
फेरीक्षा होइ तौ महादेव गौरापार्वतीके दोहाइ हनु-
मन्तजतीकी नाना चमारिकी आज्ञाका बातें कुवाचा
चूकै तौ ठाढे सुखै गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति पुरी
मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

अन्यच्च ।

डांडल कालकमुहविकरालविराक्षदेकरे अहार
नामदेव मेलजटाजाऊ बाघ जो जन सब आठ ॥

अन्यच्च ।

महादेवका कुक्कर लुटै लुटै कान मोरे निकट
आवहु सुनि आवै लोहनपह पाउ रक्षा करे
श्रीगोरखराउ ॥

इस मंत्रको दश बार पढ सर्वांगको रेणुसे स्पर्श
करे ॥

सूचीबन्धनमंत्र ।

धार धार धार बाँधौ सात बार न लागै न फूटै न
आवै घाव रक्षा करै श्रीगोरखराव मेरी भक्ति गुरुकी
शक्ति हनुमंतवीर रक्षा करै फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

सुई हाथमें लेके सात बार मंत्र पढ़े फिर जहाँ
बाँधे वहाँ छेदे ॥

पहुँचा छेदनेका मंत्र ।

काले तिल कवेला तिल गुजरी बैठी बीर पसारै
सुई न बंधे माथाइ पीर न आवै काली करुइमती
भारी दुष्य तिवुकीलार अन्ननी बाँधौ सुई अपषां-
डेकी धार आवै न लोह न फुटे घाउ रक्षा करै श्री-
गोरखराउ ॥

उरद पढ़के बकरेको मारो घाव न लगे ॥

गागर छेदनेका मंत्र ।

नीरा धार बाँधौ लक्षवार न बहै घाउ न फूटै
धार रक्षा करै श्रीगोरखराउ ॥

धनुर्वेधनमंत्र ।

ॐ सारसार माहासारसो बाँधौ तीनि धार न
धरै चोट न परै घाव रक्षा करै श्रीगोरखराउ ॥

सर्वधारबंधनमंत्र ।

जहिआ लोह तोर शिर जाका घाव मासकर
जानि हिया आनंत सोचर करहु मैं बांधौ धार
धार मूठि धनि दुनौ तारि ठठीही मोहिन अडाफा-
टिहि चण्डी दीन्हिवर मोहिं धारजेठठै तोरिइ ईश्वर
महादेवकी दुहाई मोरे पथ न आउ धारधार बांधौ
लेहु उठे धार फुटै मुनै फुटै मोरि सिद्धि गुरुके
पांय शरण ॥

धार बांधनेका दूसरा मंत्र ।

माता पिता गुरु बांधौ धार बांधौ अस्त्री वश्ये
कहै मुनै बांधा हनुमन्तनसुर नवलख शूद्रनपाके
पांडु रक्षा कर श्रीगौरखराउ एता देखन वाचानर-
सिंहके दुहाइ हमारी सवति आ ॥

अग्निस्तम्भनमंत्र ।

अपार बांधौ विज्ञान बांधौ घोरावाट आठकोटि
वैसंदर बांधौ हस्त हमारे भाइ आनाहि देखे जज्ञके
मोहि देखे बुझाइ हनुमन्त बांधौ पाना होइ जाइ
अग्नि भवतेके भवै जस मदमती हाथी हो वैसंदर
बांधौ नारायण भाषा मोरि भक्ति गुरुका शक्ति
पुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

बीग बरावेका मंत्र ।

विगुलीतियुताक पठै काल एहा एहें नाथकै मान
मारै पहरै बाढें भीम मरहु विगजौ चापुह सीम ।

मिश्रित मंत्र ।

गोरख चले विदेश कहँ सातो देहे बांधिसे पांचो
चोरविग यथा गोरखनाथकी दुहाई जौ काहु सतावे ।

राजवशीकरण ।

ॐ क्षां क्षं क्षः । १२ । सौं ह ह सः ठः ठः ठः ठः स्वाहा

इस मंत्रसे भोजनको अभिमन्त्रित करके भोजन
करे तो राजा वशीभूत होता है अथवा जिस मनु-
ष्यका नाम लेकर भोजन करे वह निश्चय वश होता
है । उक्त मन्त्रसे अभिमन्त्रित पुष्पोंकी माला शिर
पर धारण करे तौ स्त्रियें वश होती हैं । उक्त मन्त्रसे
अभिमन्त्रित कर जायफलका भक्षण करे तो
कामोद्दीपन होता है ।

अन्यच्च ।

ॐ नमो भगवते ईशानाय सोमभद्राय वशमा-
नय स्वाहा ।

देवदालीरसं ग्राह्यं शुष्कचूर्णं तु कारयेत् ।

कन्यया च युवत्या वा गुटिका कारयेद्बुधः ।

राजानो वश्यतां यान्ति स्त्रियः पुंसश्च सर्वशः ।

चौरभयं न तस्यापि न च शत्रुभयं क्वचित् ।
व्याधयः प्रशमं यान्ति शुभं च परिजायते ॥२॥
देवदालीका रस लेकर उसको शुष्ककर चूर्ण
करे फिर कन्या या युवतीसे उसकी बटिका करावे
इससे राजा, स्त्री तथा पुरुष सब वश्य होते हैं। चौर
भय शत्रुभय तथा सब व्याधियां नष्ट होती हैं
और शुभकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥ २ ॥

पुष्पार्कं श्वेतगुंजाया मूलं पञ्चमलान्वितम् ।
ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्ववश्यो भवेद्भुवम् ॥३॥
तस्या मूलं समुद्धृत्य स्वीयशुक्रेण भावयेत् ।
यस्मै प्रदीयते भोक्तुं स वश्यो भवति ध्रुवम् ॥४॥
पुष्पार्कमें श्वेत गुंजा (चोंटली) का मूल लाकर
उसको पंच मलोंसे युक्त कर ताम्बूलके साथ जिसको
दिया जायगा वह निश्चयसे वश होगा अथवा अपने
वीर्यसे भावित कर जिसको खानेके लिये दिया
जायगा वह निश्चयसे वश्य होगा ॥ ३ ॥ ४ ॥

द्वितीय मन्त्र ।

ॐ चिटि चिटि चामुण्डा काली काली महा-
काली अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।
सप्तभिर्वशयेत्सर्वं दिवसैर्विधिनामुना ।
विलिख्य तालपत्रे तं साध्यनाम्ना विदार्भितम् ॥

निक्षिप्य क्षीरे पुष्पाणि तत्सर्वं वक्ष्येद्ध्रुवम् ।
तालपत्रे लिखित्वैवं भद्रकाली गृहे खनेत् ।
वश्याय सर्वजन्तूनां प्रयोगोऽयमुदाहृतः ॥

इस मंत्रको तालपत्रपर लिखके साध्यका नाम भी लिखे फिर कनेरका दूध और जल बराबर लेके उसमें तालपत्रको डाल दे और रात्रीके समय उस पत्रको अग्निमें चढ़ा देवे और आप बैठकर १००० बार उक्त मंत्रका जप करे इस प्रकार ७ दिनपर्यंत करे तो जिसके ऊपर प्रयोग किया जाय वह वश होगा ॥

मिश्रित मंत्र ।

वाय विजुली सर्प चोर चारिड बांधौ एक ठार
धरती माता आकाश पिता रक्ष २ श्रीपरमेश्वरी
कालिकाकी वाचा दुहाई महादेवकी तालत्रय शब्दा-
वाधि रक्षा प्रसंगात् ॥

पाषाण बरावेका मंत्र ।

समुद्र समुद्रमें दीप दीपमें कूप कूपमें कुड़
जहांते चले हरिहर परे चारों तरफ बरावत चला
हनुमत बरावत चला भीम ईश्वर गौरी चला भोला
ईश्वर भांजि मठमें जाइ गौरा बैठी द्वारे न्हाइ ठपकै
नउद परे न बोला राजा इन्द्रकी दुहाइ मेरी भक्ति
गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

तालत्रयेण सर्पं वरावेका मंत्र ।

सर्पायसर्प भद्रं ते दूर गच्छ महाविष । जन्मे-
जयस्य यज्ञांते आस्तिक्यवचनं स्मर ॥ आस्ति-
क्यवचनं स्मृत्वा यः सर्पौ न निवर्त्तते । सप्तधा मि-
ष्टते मूर्ध्नि वृक्षात्पक्कफलं यथा ॥ रात्रौ पठित्वा ताल-
त्रयं दत्त्वा शयनसमये तदा सर्पभयं न कुर्यात् ।

रात्रिमें शयनके समय इन श्लोकोंको पढके तीन
तालियां बजाक सो जावे तौ सपस भय नहीं होवेगा।

सूकर मूस वरावेका मंत्र ।

हनिवन्त धावति उदरहि ल्याये बांधि अब खेत
खाय सूअर औ घरमां रहे मूस खेत घर छांडि
बाहर भूमि जाइ दोहाइ हनुमानक जो अब खेतमहँ
सुवर घरमहँ मूस जाइ ॥

नहायके इस मंत्रको ५ बार पढके पांच गांठकी
हलदी और अक्षत जहां सूअर औ मूसा आवे
वहां बराय दे ॥

अन्यच्च ।

चितफविमनचूहा गांधी एपारी रावन घर बांधी ।

अन्यच्च ।

हरदीकर गांठी अक्षत पढिके बराइव दुष्टक खेत

करमहं । पीतपीतांबरं सूहागांधी । ले जाइहु हनुवंत
तु बांधी ॥ ए हनुवंत लंकाके राउ ॥ एहि कोणे पैसेहु
एहि कोणे जाउ ॥

केवल सूसवरवेका मंत्र ।

सूहा सूहा कुंभ कराई । जबही पठवी तबही
जाई ॥ सूहाके ऊपर सूहाके फेटातु जाइ काटहु आन
करेतेत ॥ गौरापार्वतीकी दुहाई महादेवकी आज्ञा ॥

शस्त्रास्त्र वरावेका मंत्र ।

बांधौ तूपक अवनि वार न धरै चोट न परे घाउ
रक्षा करे श्रीगोरखराउ ॥

सप्तवार पढै सर्वांग स्पृशेद्वेणुना ॥

अग्निस्तम्भनमंत्रः ।

अज्ञानबांधो विज्ञानबांधो बांधो घोराघाट आठ
कोटि बैसंदर बांधो अस्त हमारा भाइ । आनहि
देखे अज्ञके मोहि देखि बुझाई हनुवंत बांधो पानी
होइ जाइ अग्निभवेत कं भवे जसमसी हाथी होइ
बैसंदर बांधो नारायण साखि मोरी गुरुकी शक्ति
कुरी मंत्र ईश्वरोवाच ॥

अन्यम् ।

अग्निबांधो बाहन बांधो कुल्पाहा बांधोर बीच-
की वायु चारिहु छुटै बैसंदर बांधो आतस मेरा भाव

अजर देखे उभगे हमहिं देखे शीतल होइ जाइ अग्नि
मल्लिगण्डे लकड़ी बांधो बहिनि बांधो शाल हाथ जरे
न जिह्वा जरे हनिवंत बीरकी आज्ञा फुरे देखि वासुंधर
हनुमंत तैरी शक्ति गुरकी शक्ति फुरो मंत्रईश्वरोवाचा ।

-कराही थांभेका मंत्र ।

महिथांभो महिअरथांभोथांभोमाटी सार थांभनो
आपनो बैसंदर तेलहि करोतु धार ॥
दिव्यके कराही पहि ७ बेर तौ जीते ॥

अन्यत्र ।

बन बांधौ बनसे दिनि बांधौ बांधौ कंठाधार तहाँ
थांभौ तेलतेलाई औ थांभौ बैसंदर छार बनमें लु शीतल
तातेलावे जयपार ब्रह्मा विष्णु महेश तीनि उचलके-
दार देवी देवी कामाज्ञाकी हुहाई पानी पंथ होई जाइ ॥

प्रसंगादग्निपुत्कारनमंत्र ।

अग्नि भवतेके भवे जज्ञमदमतीपर पिण्ड दुःख
पावै दोहाई नरसिंह जग दुःख पावै ॥

तेलस्तंभनमंत्र ।

तेल थांभौ तेलई थांभौ अग्नि बैसंदर थांभौ पांच
पुत्र कुंतीके पांचो चले केदार अग्नि चलते हमचले
अगिया परा तुषार ॥

टोना झारेका मंत्र ।

लोना सलोना योगिनि बांधे टोना आवहु सखि
मिलि जाहु कवनु कवनु देश कवनु फिरि आदि
अफूल फुलवाई ज्यों ज्यों आवै वास त्यों त्यों
फलानी आवै हमरे पास कवरु देवीकी शक्ति मेरी
भक्ति फुरो मोहनी ईश्वरोवाच ॥

अन्यत्र ।

सोम शनिश्चर भौम अगारी । कहा चललि देई
अंधारी । चारिजटा वज्रकेवार । दीनहि बांधो सोम-
द्वार । उत्तर बांधो कोइला दानव दक्षिण बांधो क्षेत्र
पाल चारि विद्या बांधिके देउ विशेष मवर मवर दि-
धिल भवरगण चलु उत्तरापथ योगिनी चलु पाता-
लसे बासुकी चलु रामचन्द्रके पायक अंजनीके चीर-
लागे ईश्वर महादेव गौरा पार्वतीकी दुहाई जो
टोना रहे एही पिंड मन्त्र पढि फूकै टोना कहल
न रहे ॥

टोना झारेके प्रत्यक्ष करनेका मंत्र ।

लोहेके कोठिला वज्रके किवार । तेहिपर नाबो
बारम्बार । तेते नहिं पहनहिं कहएवार एका
पंठा अनंटा बांधौ डीठि मूठि बांधौ तीरा बांधौ
स्वर्गे इन्द्र बांधौ पाताले बासुकी नाग बांधौ सैय-

दूकै पाँव शरण षोडकी भक्ति नारसिंह बाहिकार
खेलु २ शंकिनी डंकिनी सात सेतरके संकरी बारह
मनके पहार तेहि ऊपर बैठ अब देवी चौतराकथ
जान जंभाइ जंभाइ गोरखकी दुहाई नानाचमा-
रीकी दुहाई तैंतीस कोटि देवताओंकी दुहाई हनु-
मानकी दुहाई काशी कोतवाल भैराकी दुहाई अपने
गुरुहि कटारी सारु देवता खल सम आप लेइ
काशी कादि कादिकाशीकर पाप तेहि देवताके
कांध चढाइ काट जो मनमहँ क्षोभराखै ॥

मन्त्र स्त्रीझारेके टोना चुरैलके ।

एकांत परदा कराइके नोन पानीसे झारिये तौ
टोनादिक न रहै उत्तरि जाइ तुरंत ॥

औ पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण चारिका सर्ग प्राताल
आंगनद्वार घर संझार खाट बिछौना गडई सोवनार
संगलन औ जेवनार विरा सोंधावै फुलेल लवंग
सोपारीजे मुह तेल अवटन उवटन औ अवनहान
पहिरणलहंगा सारी जानडोराचोलिया चादरि झीन-
मोट रुइ ओठन झीन शंकर गौरा छेत्रपाला पहिले
झारो बारम्बार काजर तिलक लिलार आंखि नाक
कान कपार मुह चोटी कण्ठ अवकंष कांध बाँह
हाथ गोड अंगुरी नख धुकंधुकी अस्थल नाभी

पेटो नीचे जोनि चरणे कल भेटो पीठि करि दाव
जांच पेडुरी घूठी पावतर ऊपर अंगुरा चाम रक्त
मांस डांड गुदी धातु जो नहींछाडु अंतरी कोठरी
करेज पित्तही पित्तजिथ प्राण सब बित बाल अंक-
मने जागु बडे नरसिंह कि आलु कबहुन लागु फांस
पित्तर रांग कांच लोहरूप सोन साच पाट पटवज्ञान
रोग जोग कारण दीक्षन डीठि सूठि टोना थापक
नवनाथ चौरासी सिद्धके सराप डाइनि योगिनी
चुरइलि भूतव्याधि परि अर जेजुलभने गोरख बैन
साच प्रगटरे विलाडकाली औ भैरवकी हांक फुरो
ईश्वरोवाच ॥

मंत्र ज्वरझारनेका ।

ओंनमो अजैपालकी दुहाई जो ज्वर रहै तो
महादेवकी दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

इस मंत्रको सात ७ बार पढके झारे तो ज्वर नरहै ॥

अन्यच्च ।

समुद्रस्योत्तरे कूले कुमुदी नाम वानरः ।

तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दिशो दश ॥

इस मंत्रको पढ २६ के कुशासे झारे तो ज्वर न रहै ॥

मंत्र तृज्वरझारनेका ।

कारीकुकरी सात पिछा व्याई सातौ दूधपिआई

जिआह् वाच धन इलोकांश्चलायेके मंत्रेतीनां जाह
मंत्रं पठि पठि दाहिने हाथसे आंचर मजित करके
रोलीसे रोग छुवाह ॥

श्रीवश्य-प्रयोग ।

ओं भगवति भग भाग दाहिनी असुकीं मम
वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मन्त्रसे शुरुवारके दिन लवणको अभिस-
न्वित करके जिस स्त्रीको खानपानमें है वह
अवश्य वशमें होगी ॥

द्वितीय मंत्र ।

ॐ ह्रीं महामातंगीश्वरी चांडालिनि असुकीं
पच पच दह दह मथ मथ स्वाहा ॥

रविवारके दिन जिसका नाम लेकर दूध और
शर्करासे होम कर वह वशमें होगी उपरोक्त दोनों
मन्त्रोंका पुरश्चरण करते समय १०००० जप कर-
नेसे सिद्धि होती है ॥

अन्य मंत्र ।

ॐ कामिनी रंजिनी स्वाहा ॥

अमुं मंत्रं अलक्षकेन स्त्रियाः करतले लिखेत्
सा वरया भवति ॥

अन्य प्रयोग ।

ॐ कुरुमनी स्वाहा ॥

इस मन्त्रस्य १०८ बार पुष्पको अभिसन्धित
करके स्त्रीको सुँवानेसे वशमें होगी ॥

द्वितीय मंत्र ।

ॐ नमो नमः पिशानी रूप त्रिशूलं खड्गं हस्ते
सिंहासने असुकीं मे वशमागच्छ २ कुरु २ स्वाहा ॥

इस मंत्रको भोजपत्रके ऊपर लिखकर जिसका
नाम लेके धूप दे वह वशमें होगा । परन्तु इस मंत्र-
को ७ अथवा २१ दिन सिद्ध करना चाहिये ॥

अन्यम् ।

ॐ ह्रीं सः ॥

इति मन्त्रेण मदनसदनांकुशाध्वजं मेलयित्वा
साध्यां वासाध्यां अशुतं १०००० जपे यथाभिलषि-
तदिनेषु वश्यो भवति ॥

अन्य प्रयोग ।

ह्रीं अघोरे ह्रीं अघोरे हूं घोरघोरतरे सर्व सर्वे नम-
स्ते रूपे हः ऐं ह्रीं ह्रीं चासुण्डायै विच्चे विच्चे नवाक्ष-
रचंडीमंत्रेण निमन्त्रयेत्तच्च बलिपूर्वकम् ॥

अन्य मंत्रप्रयोग ।

ऐं भग भुगे भगनि भागोदरि भगमाले योनि

भगनिपतिनि सर्वभगसंकरीभगरूपे नित्यकृते भग-
स्वरूपे सर्वभगानि स वशमानय वरदेरेते सुरेते भग-
क्षिने क्वा न द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघेभगविधे शुभ
क्षोभय सर्व सत्त्वाभगेश्वरि ऐं क्लृ ज ण्लू मै ण्लू मा-
ण्लू हे हे क्षिन्ने सवाणि भगानि तस्मै स्वाहा ॥

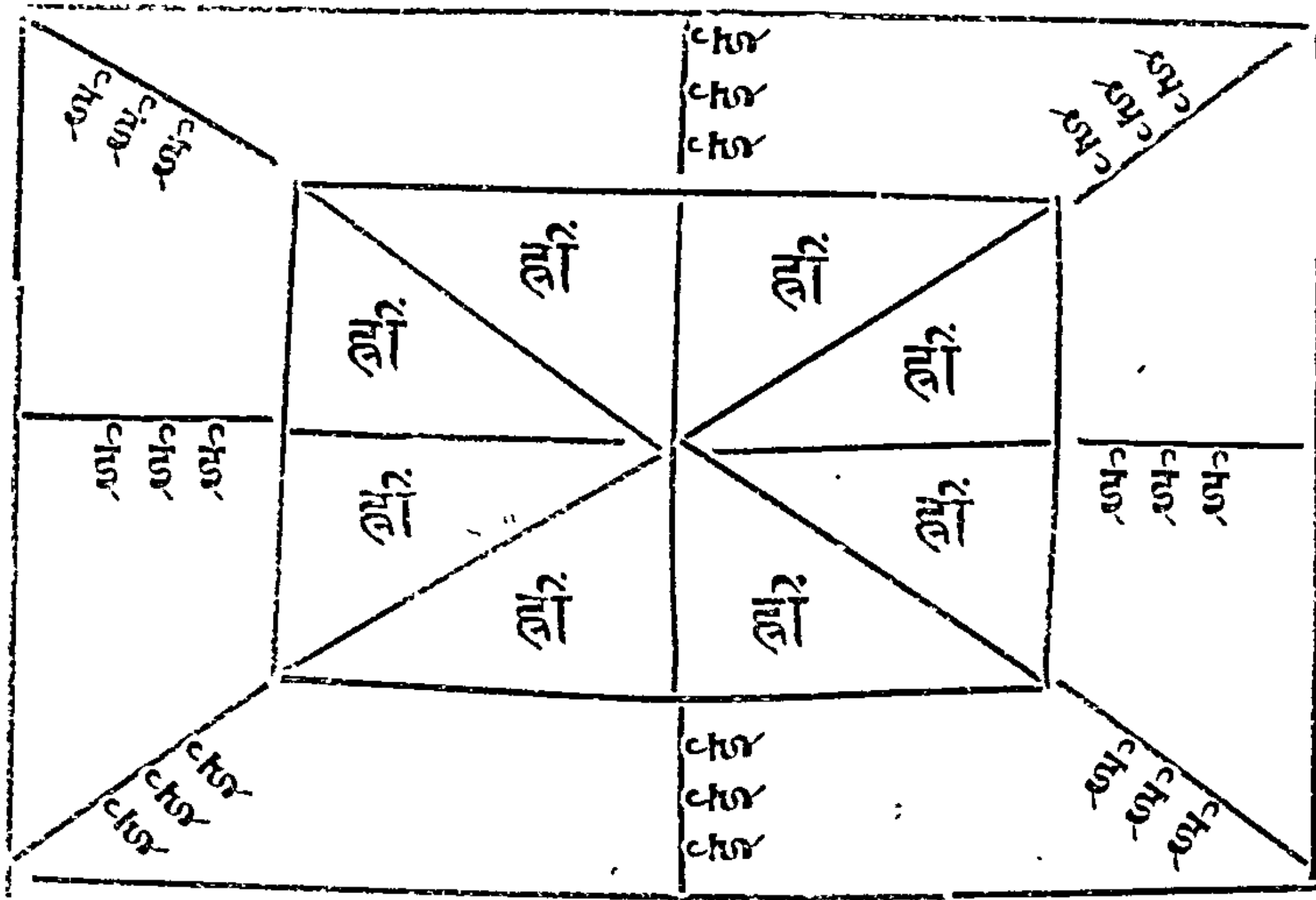
जिस स्त्रीको वशमें करना होइ उसे देखता जाय
और उक्त मन्त्रको जपे तौ शीघ्र वशमें होगी ॥

दूसरा मंत्र ।

ॐ नमो उच्छिष्ट चाण्डालिनि पच २ भंज २
मोहे २ मम अमुकीं वश्यं कुरु २ स्वाहा ॥

भोजन करनेके अनन्तर पके हुए चावलोंको
एक हाथमें लेकर इस मंत्रको पढ़े फिर उस भात-
को रखछोड़े । इसी प्रकार १० दिन पर्यंत करे फिर
दसों दिनके भातको लेके ७ बार मंत्र पढ़कर स्त्रीको
खानेके लिये दे अथवा उसके घरमें फेंकदे तौ वह
वशमें होगी ॥

परन्तु—नीचे लिखे यंत्रको अष्टगन्धसे भोजप-
त्रके ऊपर लिखकर पूजा करे प्रतिष्ठा करे और
आसनके नीचे दाबकर फिर मन्त्र जपे ॥



ॐ कामिनी रंजनि स्वाहा ॥

अस्य मन्त्रस्यायुतं १०००० पुरश्चरणं कृत्वा
कामिनी हस्ते लिखेत् । सकृत् रविगुरुभौमवार एव
वारत्रयं विलिखेत् तदा स्त्री वश्या भविष्यति ॥

अथान्य प्रयोग ।

ॐ नमः क्षिप्रकामिनि अमुकीं मे वशमानय
स्वाहा ॥

प्रातःकालहीदन्तधावन करके जलभरी छटिया
हाथमें लेकर ७ बार मंत्र पढके उस जलको पीवै इस
प्रकार सात दिन पर्यंत करनेसे स्त्री वशमें होती है ॥

कामाक्रान्तेन चित्तेन मासार्धं जपते निशि ॥

अवश्यं कुरुते वश्यं प्रसन्नो विश्वचेटकः ॥ १ ॥

ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाच असुकीं
कामं ग्राहय २ स्वप्ने मम रूपेण नखैर्विदारय २
द्रावय २ रद महेन बन्धय २ श्रीं फट् ॥

द्वितीय मन्त्र ।

ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाच असुकीं
कामग्राहय पद्मे मम रूपेण नखैर्विदारय २ द्रावय २
बन्धय २ श्रीं फट् ॥

उपरोक्त दोनों मन्त्रोंकी वही विधि है जैसी इनसे
पहले मन्त्रकी विधान करी गई है ॥

अन्त्यमन्त्रप्रयोग ।

ॐ ठः ठः ठः ठः असुकीं म वशमानय स्वाहा
ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा । श्रीबटुकाय नमः ॥

इस मन्त्रको १०००० जपे रविवारके दिन जप
करनेसे सिद्ध होता है ॥

इसके प्रयोग करनेकी यह विधि है कि रविवा-
रके दिन जौका आटा सवा पाव महीन पीसकर
१ रोटी बनाके बेलै उसे मन्द २ आंचपर सके ।
एकही तरफ सेकै दूसरी तरफ न सेकै एकही तर-
फसे ऐसी सेकै कि दोनों तरफ सिक जावै । फिर

१ यदि दोनों मन्त्रोंको कामयुक्त चित्तसे १५ दिन पर्यंत जपे तो
भगवान् महादेवकी कृपासे स्त्री अवश्य बगीभूत होगी ॥

जिधर लेकी नहीं है उधर मन्त्र लिखै । सिंदूरको पानीमें धोकर तर्जनी अँगुलीसे मन्त्र लिखना चाहिये । फिर उसकी पंचोपचार पूजा करे । मिष्टान्न दही और चीनी उस रोटीके ऊपर रखना यह सब वस्तु इस प्रकार रखनी जिसमें रोटी टक जावै ॥

इस प्रकार करके जिसे वशमें करना हो उसका नाम ले २ कर उस मन्त्रका १०८ बार जप करे । इसके बाद मन्त्र पढ़ २ के उस रोटीके टुकड़े कर २ के काले कुत्तेको खंवावै । इस प्रकार करनेसे अवश्य वशमें होगी । पूजनकी सामग्री यह है—गन्ध, पुष्प, सुपारी, पान, दीपक, गौरे बटुकनाथ और दक्षिणा इस मन्त्रका पुरश्चरण करते समय ब्रह्मचर्यसे रहना चाहिये ॥

आंखि झारनेका मंत्र ।

पानीके छोटे पट्टिके मारे सातबेर कुलीमंडा जाई ॥

सर्पातिचसुकन्यांच च्यवनं शक्रमन्वितौ ॥

एतेषां स्मरणाद्भूणां नेत्ररोगो प्रणश्यति ॥

उठी आंखि झारनेका मन्त्र ।

ॐ बने बिआई बानरी जहां २ हनिवन्त आंखि

१ यदि स्त्रीको वशमें करना होय तो काली कुतियाको रोटी खानी चाहिये ।

२ यदि एक न खाय तो दूसरे कुत्ते अथवा कुतियाको खानी चाहिये ।

पीडा कषावरी गिहिया थनैलाइ चारिउजाइ भरमत
गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति पुरो मंत्र इश्वरावाच ॥

आंखपर हाथ फेरे सात सात बार पढके फूँके
तौ व्यथा और पीडा न रहे ॥

स्तौंधी झारनेका मन्त्र ।

मंत्र पढि २ के फूँके भाट भाटिनि सरिचली
कहां जाइब जावेउ समुद्र पार भाटिनि कहा मैं
बिआवेऊ कुशकी छाली बिआवेऊ उपसमा छोकर
मुडा अंडाघोसों हिलतारा सोहिल तारा राजा अजै-
पाल उतर तर है राजा अजैपाल करकंदार पाना
भरत रहै उन्ह देखै पावावालाउ गोडिया मला
उजाल तैके मैं अधोखी ईश्वर महादेव कै दोहाई
येही घरी उतारि जाइ ॥

रस्सा झारनेका मन्त्र ।

पानी ७ बेर पढके पियेके देई कारनी कर सो तुरंत
छूटै । ॐ अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः मयामयत्यंब
लमीक्ष्यमाणः उभौवणावृष्टिरुग्रपुयोपसप्तादेवेष्व-
शिषो जगाम ॥ आतापि भक्षितो येन वातापि च
महाबलः । समुद्रः शोषितो येन समेऽगस्त्यः प्रसी-
दतु ॥ अगस्त्यं कुंभकर्णं च शनिं च वडवानलम् ।
आहारपरिपाकार्थं संस्मरेच्च वृकोदरम् ॥

दांतव्यथा झारनेका मन्त्र ।

पाटिके फूके दरदपै बेर ७ व्यथा छूटै तुरंत ।
अग्नि बांधौ अग्निश्चर बांधौ सो खाल विकराल बांधौ
सो लोहां लोहार बांधौ वज्रक निहाय वज्रघन दांत
पिराय तो पिराय महादेवकै आन ॥

नारा उखरा हो तो हाथ तर्जनी आंगुरिसे झारै ॥

सम्पूर्ण शिरोव्यथाके मन्त्र ।

मालाकण्डाके बेर २१ तब फूके शिरोव्यथा
छूटै । निसु नहिंरै रोइबद्वर बेघ गरजहि निसुनाहि
कहलु धर कुफु निवेरी फुान डमरू न बजै निसु-
नाहि कहलु विन पटु साचभई ॥

मन्त्र हूक झारनेका ।

ॐ सुमेरुपर्वत पर नानाचमारी सोनेकी रांपी
सोनेका सुतारी हूक चूक वाह बिलांरी धरणी नालि
काटि कूटि समुद्र खारी बहावौ नानाचमारीकी
हुहाइ फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

बार इक्कीस पटै शरीरहूक न रहै ।

कर्णमूल मंत्र ।

पाटिके राखसै झारी कर्णमूल न रहै । वनाह गाठि
बनरी तौ डटे हनुमान कंठा बिलारी बापी थनैली
कर्णमूल समजाइरामचंद्रकीबचनपानीपथहोइजाइ

घनिहीका मंत्र ।

एहर चालो मेहर चालो लंका छोडि विभीषण
चालो । बेगि चल बेगि चल मंत्रसहि ।

थनैली झारनेका मंत्र ।

झंष विलारी बघ थनैला पांचवान मोहिं भैरो हैल
झंष विलारी बघ थनैला डावा पलटि जाहु घर अपने
राजा मनेरीकी दुहाई जोडावार है गुरुकी दोहाई ॥

ममरषा झारनेका मंत्र ।

पटि २ कै फूक । राजा अजैपाल सागर खतवांरा
बह बांधा घाट उतई ममरषी पानि पिउ सातराति
मोहि पीपरपात गुंगी बौरी डोमिनी चंडालिनी तू है
नीकी ममरषी तिल एक रथ ठाठि कण्ठ झारि
ममरषी क्रोध करु ॥

अण्डवृद्धिका मंत्र ।

पटि पटि मले फूके अण्डवृद्धि छूटै । ॐ नमो आदेश
गुरुको जैसेकै लेहु रामचन्द्र कबूल ओसइ करहु
राध विनि कबूल पवनपूत हनुमंत धाउ हर हर रावन
कूट मिरावन श्रवइ अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड अण्ड
विहण्ड खेतहि श्रवइ वाजंगर्भहि श्रवइ स्त्री पीलहि
श्रवइ शाप हर हर जंवीर हर जंवीर हर हर हर ॥

यह मंत्र महा अनुभाव है चारि वस्तुपर चलता है
जो स्त्रीको पानी पढके पिआवै तो गर्भ श्रवे महीना
हुइ तीनका । पुरुषको पिआवै अंडवृद्धि छूटै नीका
होय । एक ढेला पढके सांपके विपरीपर धरै तो सांप
निकलि जाइ । तीन ढेला पढके तीनिकोने फेंकिदेइ
तो खेत सुखि जाइ उपजे नहा । दिन तीन चारिका
बोवा होइ तिसपर चलै मंत्र पढके बार तीनउबार ॥

मृगीका मंत्र ।

हाल हल सरगत मंडिका पुडिआ श्रीराम
फुकै मृगीवायु सुख ॐ ठः ठः स्वाहा ॥

यह मंत्र लिखके कंठमें बांधै जब मृगी आवे ॥
खेत नीके उपजे और रक्षा रहै

इसके मन्त्र ।

उलटथि नरसिंह पलटथि काया रक्षाकरथि
नरसिंहराया ॥

फूकावागीका मन्त्र ।

बनेविआई अंजनि जायो सुतहनुवंत नेहरुवा-
देहरुवा जरिहोइ भस्मंत गुरुकी शक्ति ॥

मंत्र पढि बेर ७ सीकटी एक वा तीन वा साल
लेइ झारना फूकावागी नीका होय ॥

अन्यच्च ।

भांभनसेति योगीभया जनेउतोरिनहेरुआकिया
न पाकै न फूटे न व्यथाकरे विरूपाक्षकी आज्ञा
भीतरहि सरै ॥

७ सात बेर पढि पानीका छीटा मारे नहेरुवा
ओपिआइव पानी मंत्र पढे बार २१ नहेरुवा न रहै ॥

पोतरहंडि व हूक और घेटमोर

झारैका मन्त्र ।

मैघडंबर पोतरहंडी तातीशरीर गरीगै जाती
दोहाई अजैपालकै जोन जाय बाँधि ॥

मंत्र दादका ।

निकाहोय पानी परोरि पिआवो । ॐ गुरुभ्योनमः
द्वंद्वं पूरीदिशा मेरुनाथ दलक्षनामरे विशाहती
राजा बैरीधनआज्ञा राज बासुकीके आन हाथ बेगै
चलाव ॥

अन्यच्च ।

हाथ बेगै चलाइ आदिनाय पवनपूत हनिवन्त
कर मोर कलमेरुचाल मंदिरचाल नवग्रहचाल दोष
चाल पिनाइचाल डोरीचाल इन्द्रहिचालचालरचाल
हतन्तविनासहकाल उठि विषितरुवरचाल हम हनु-
मंते सुगरे लिंडापरोरौ वर्धछले तरुपरि धानपरिहि-

अथ अष्टोत्तरशतव्याधि लावरे विशालाव अहरोवि-
शआहे दादुवालेको पानी पिआइव ॥

अन्यच्च ।

विषकै पाशरि विषकै मानि । विषै करिय भादिउ
जानि । एकमजाइ दादुकरिअअमुकाअंगेकसकंडु
दादु रिनाइके छेद करि सिद्ध गुरुकी जावहारण ।

संत्र रिसाके पानी परोरि पियाइ ॥

ॐ कृकराके नास्त्यकान अन अमानित अमुकाके
हर्ष न होय रक्ता पीता स्वेता जावत जीवती हर्ष
ज्ञान तावत प्रकाशं ब्रह्महत्याप्राप्तोति ब्रह्मणेनमः
रुद्रायनमः अमरुत्याय नमः ॥

कुकुर काटे तो झारेका संत्र ।

कुम्हार चाकुरके साथी डड्डपर फेरि फेरि
झारे रोषां निकसे नीका होय ॥

कारी कुत्ती विविलारी धौना कुत्ता कलोर
कलाना काटा कुकुरबारधवलयायु ।

अन्यच्च ॥

ॐ कुलकुम्हाहा पानीमंत्रिके देव विरुवा सात७ ।

संत्र शौंगी मछरिका ॥

शौंगी मौरी मेवलाशी मारेमारे दुगादिशी जैथा
लुषना ता पोखरा गौरा पैठि नहाहि महार्देव पैठि
कुंकाहि विष निविष होइ जाहि ॥

मंत्र कठवेगुचीका ।

सौनेके सिंधोरा रूपे लागावान छवभासके सुअ
लिने गुचीलागसिन निषयरुवरुआके कान धरुव-
रुआ मंत्र तुहाहि जगावै नोता योगिनि श्रीपार्वती
जोग जाहु उपरवैशो होइत ॥

मंत्र बीछी झारेका ।

सुरही कारीगाह गाहकी चमरी पूछी लेकरे गोबर
बिछी बिआह बीछी तारे कह जाति गौरावर्ण आठ-
हजातिछ कारीछ बीअरीछ भूमाधारीछ रत्न
जगारी छछ कुंहुं कुंहुं छारि उलरु बिछी हाड हाड पोर
पोरले कस मारे लोलकंठ गरमोर महादेवको दुहाइ
गौरा पार्वतीको दुहाइ अनील देहरी शङार बन छाह
उतारहि बीछी हनुमंतकी आज्ञा दुहाइ हनुमंतकी ॥

अन्यत्र ।

प्रवत उपर सुरहीगाह लेकरे गोबर बीछी बि-
आह छः कारी छः गौरी छः का जोता उतारिकै
बिधा बिछिठा बहिआ आठ गाठि नव पोर बीछी
कर अजोर बलि चहु चलाइ करवाउ ईश्वर महादे-
वके दुहाइ जहां गुरुके पांव सरके तहाहि गुरुके कुश
कजुरी तहाहि विष्णुपुरी निर्माजाहके दुहाइ महा-
देव गुरुके ठावाहि ठाव बीछी पार्वती ॥

अन्यच्च ।

बीछी २ तोरे कै जाति छः कारी छः पीयरी छः
परवारी बोधा पषाना पसरवपाउ तोरी विषितइमें
नाहि ठाउ ऊपरजा सिगुधै पाउ शिव वचन शिव
नारि हनुमान्के आन महादेवके आन गौरापाव
तीके आन नानाचमारिनिके आन उत्तरि आउ
उत्तरि आउ ॥

अन्यच्च ।

अब हठ मुठिवैगनभाविउतरबीछी मति करवानि ॥

अन्यच्च ।

जे सँदेश लेइ आवे तेहि पानी परोरि पिआइ देव
कायो पापे शिर मानिकरामुष मोडो मरिजासि अन
षांधनो पानी पावै बांधि उत्तरि जासि ॥

बीछूके विष चढानेका मंत्र ।

दूटे खाट पुराने बान चढजा बीछू शिरके तान ।
जहां बीछूने काटा हो उस स्थानमें इस मंत्रको
फूँके तौ विष बढजायगा ॥

तत्रादौ सांप झारेका मंत्र ।

उत्तर दिशि कारी वादरि तेहि मध्य ठाट काल
पुरुष एक हाथ चक्र एक हाथगदा चक्र मारो शत
खंड जाइ गदा मारे सातो पाताल जाइ ॐ हर हर
निर्विष शिवाज्ञा ॥

अन्यच्च ।

थिरुपवन जेहि विष नाशे तेहि देखि विषधरह
कांषे सत्पर्जा आप विषमो संदीतपैष्टयै नहिं विषह
मंत्रे कुशलबालुगाले झावित्काल निर्विश होइ ॥

उपरबंधन झारेका मंत्र ।

जटा ऊपर कारागरे ॐ नमः शिवाय शिवकी
आज्ञा पुनः कागाचरे भीटे पानिनिआपरे पीठे सवा
भार विष निजबडं अपने डीठे ॐ नमः शिव
विआज्ञा ॥

लहरि जगानेके मंत्र ।

छवमासकी परीडंककथाकीकरार गराने नतेशी
मछिहि काग आवत कागा चरइ भीटे पानिआपरइ
पीठे सवाभार विष निजबडं अपने उडीठे ॐ नमः
शिव विआज्ञा २ गिद्ध उडइ ऊपर ईशर बाहन भद्र
ठांविहिषं नोना परिहाथ पंडानके परिडंक उठि
ठाठि भइ जागु २ ईश्वर डुहुरे डंकहाडं कंडाडिगौ
पंजरह लागिकाइ देहांक देत आवै नोना योगिनि
डंक उठै बिहसाईते साते समुद्रे माझे पंडी कबीर
बवाठे जीव धरवरो आमंत्रि रहहि जगावै नोना यो-
गिनि पारवती जागु परमइ शतहुहुरे डंक ॥

अन्यच्च ।

बौह परोस रात सुबु २ काल डंक डंक मरे तो मैं
मारो सात गद सुरल पांजररापु एकका काल महेश
समंत्र यहाँ आप कह काटे तो मनमह बुहुकीके
थुकिडारी आनके काटे तो हाथसे ॐ बुहुकार अर्ध
कार कबुविशिनार पार छिछी विशनाहि आपु कह
काटे भा आनकह काटे तो पटि डंक पोछि देई ॥

शत्रुपादत्राणमारण मंत्र ।

इमनामीन् सलास मातिन्

एक चिल्ल ४० दिनका रोज करै जप १०००
करके अमल करै । फूल, लोबान, सन्दल, चमेलीका
तेल, कस्तूरी, अरगजा दशांग अवर इन सबको बरा-
बर लेके चूर्ण करले इनकी धूप चमेलीके तेलमें
देना ४० दिनतक अमल करना इसके बाद खूब मज
बूत मिट्टीका एक पुतला बनाके सुखावे उसे अगाड़ी
धरकर शत्रुका ध्यान करके ऊपर लिखे मंत्रका जप
करे माला जीयापोताके १०८ दानेकी जपना । एक
जूता उस पुतलेके मारना इस प्रकार १०० माला
जपके १०० जूते मारना और धूप देते जाना इस
तरह सात दिनतक करनेसे शत्रुके जूते लगेंगे ।
अगर इस मंत्रको इसी प्रकार ४० दिनतक करै तो
शत्रुका कपाल भग्न होजायगा ॥

शत्रुके आवेश करनेका मन्त्र ।

जाग जागरे मसान मेरे सुरति करि २ फलानेका
बेटा फलानेके घरजा जान जाय तौ तेरी मा बहि-
नकी तीन तह्साक ॥

इस मंत्रको सिद्धयोगमें १०८ बार जपके सिद्ध
कर रखे कबरमें शूकरका एक दांत गाड़दे । इस
मंत्रको २१ दिनतक कबरके पास खड़ा होके जपे
इस प्रकार रात्रीको जप करे तौ शत्रु घरसे निकले
औं मुक्त करना होय तौ उस दांतको कबरमेंसे
निकाल ले ॥

अनुभूत मन्त्र ।

बार बांधी बार निकले जाकाट धारनी सूजाये
लथ बहरना चौहाथसे तौ काट दांतसे डुहाई
मामा हवाकी ॥

पहले पोतनी मट्टीसे चौका लगावे । उसके ऊपर
सुपेड़ चादर बिछाके ऊपर बैठके जपे जपते वक्त
पश्चिम दिशाको मुख कर लेना चाहिये । एक घृतका
दीपक बालके सन्मुख धर लेना । एक पैसेका हलुआ
और एक पैसेकी पूरी । अतर मेवा गांजेकी चिलम
यह सब पदार्थ रखे, दो लौंगके जोड़े धरना एक
नींबू यह सब दीपकके अगाड़ी रखके लोबानकी
धूप देना । इसके बाद संपूर्ण वस्तुओंको दरयाबमें

फेंक देना । इसी प्रकार ४० दिन तक करना । परन्तु नींबू और दीपकको धरा रहने दे । फिर १०१ बार नींबूको अभिमंत्रित करके नींबूको छेदे इस प्रकार ४० दिन करनेसे शत्रुक उदरमें पीडा होगी और छेदन करनेसे मृत्यु होगी ॥

वशीकरणप्रयोग ।

ॐ अस्य श्रीवामदेवमन्त्रस्य संमोहनत्रयः ।
गायत्री छन्दः । श्रीकामदेवदेवता अमुकवश्यार्थे
जपे विनियोगः । अथ न्यासः—कां हृदयाय नमः ।
कीं शिरसे स्वाहा । कूं शिखायै वौषट् । कामदेवो
देवो देवता अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानम् ।

जपारुणं रक्तविभूषणाढ्यं मीनध्वजं चारुकृतांग
रागम् । कराम्बुजैरंकुशमिक्षुचापं पुष्पास्त्रपाशौ
दधत्तं नमामि । ॐ कामदेवाय सर्वजनाप्रियाय सर्व
जनसंमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वज-
नस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मंत्रको ६००० जपके सिद्ध करना चाहिये
कनेरके लाल फूल और चमेलीका इत्र लगाके द-
शांश होम करे । बटुकके निमित्त कुमारको भो-
जन करावे ऊपर लिखे मन्त्रसे १०८ बार चन्द-
नको अभिमंत्रित करके उस कुमारके तिलक

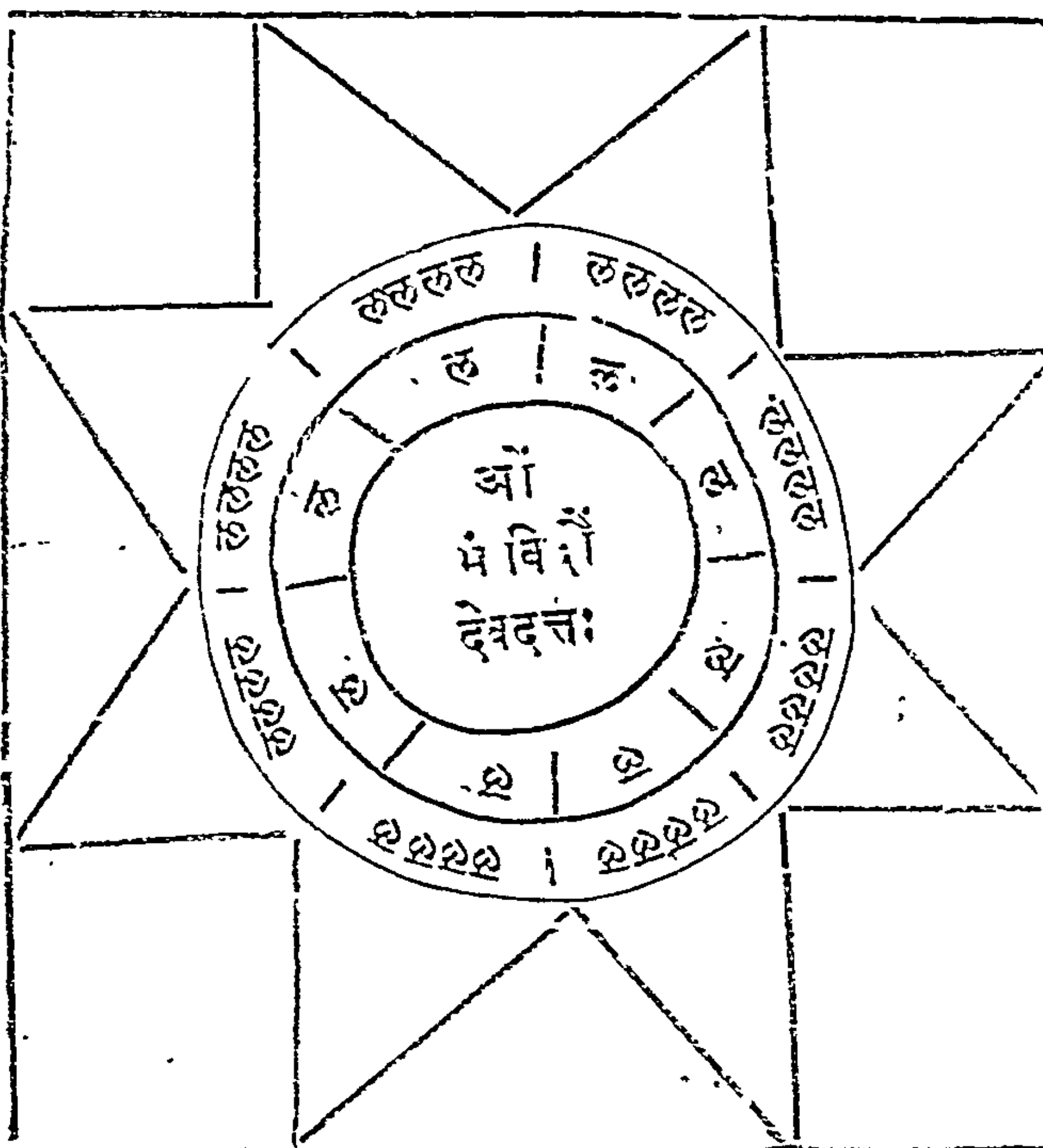
लगावे । और जिसको वश करना हो उसका ध्यान
करके बटुकसे संभाषण करे तौ अवश्य वश होगा ॥

सारण प्रयोग ।

ऐं हूं ऐं श्रीं मम शत्रुन् हानय हानय घातय
घातय मारय मारय हुं फट् स्वाहा ॥

इस मंत्रके प्रयोग करनेकी यह विधि है कि
रात्रीके समय शत्रुका ध्यान करके काष्ठक मीलाके
ऊपर १००० जप करे इस प्रकार ४८ दिन तक
करनेसे अवश्य शत्रुकी मृत्यु होगी ॥

यन्त्र ।



इस यंत्रको भोजयंत्रके ऊपर हरिद्रा और हर-
तालसे लिखकर जिसका मारण करना हो उसका
नाम लिखे और एकान्तमें स्थित करदे तो शत्रुका
नाश होगा ॥

अथवा इस यंत्रकी पूजा करके यंत्रको एका-
न्तमें रखकर नीचे लिखे मंत्रको जपे तो शत्रुका
मारण होगा ॥

मन्त्र ।

मुंक्ष्व मुंक्ष्व अमुकं क्षं ।

इस मंत्रको एकान्तमें यंत्रक निकट बैठक जपे
और कड़वे तेलसे होम करे तो शत्रुकी मृत्यु होगी ॥

मंत्र वैरी षसावेका ।

त्रिपुरा संहारित जौ तोहि तुजगे मानि जाउ पूत
परारे बसिकरे वैरी रक्त नहाउ अलथांभौ थल थां-
भौ आपनिकाया खंड पृथिवी थांभौ त्रिपुरामाया
थांभौ तिन्हम त्रिपुरसुंदरीकी शरण जौं अमुकाके
विष हरथ परी वेगि देइ ॥

अथ बंधपलास मंत्र ।

ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख गदा प्रहारिणी
अमुकस्य बंदी पलास । २१ बार पढेले बंदी छूटे ॥

अन्यच्च ।

ॐ गज गतेऽमकुरते दाम डंडस्त फेफेफेत्कार
कारै विशिष ज्वाला माला करालं हो हो हो होनि
हांतं हसि हसि मनिसभा सपाटा रहा सेहं कारणा
नौदौस्ति रवन कुरुते सर्वतु सुखजंति । वार २१ ॥

अन्यच्च ।

ॐ छोटि मोटि वेटुकी कानी कटुकइ इताहसा
एक विडुजइ मगीजइ सविंदु जाइ अमुकाका विबंधि
पबंधि दोषो कामाक्षा देवी तेरी शक्ति मेरी भक्ति
फुरो मंत्र । वार २१ । ॥

अन्यच्च ।

ॐ नमोस्तु ते भगवते पार्श्वचन्द्राधरेन्द्र पद्मावती
सहितायमेऽभीष्ट सिद्धिं दुष्टग्रह भस्म भक्ष्यं स्वाहा
स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा हिलि हिलि मातं-
गानि स्वाहा स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा । २१
वंदी मोचनं भवति ॥

अन्यच्च ।

वाघ वाहिनि सिंहेया काली काली कालाम्बी
आजा देवी मैं तोरी शरणे वने नाही विशस तोहि देवी
त्रिभुवनरेमाष चौषष्टि बंधन काटार भांगी अपिला
वाघ २ थापा एनी अलं चाषिष्ट बंधन होइल वीरल

कालीकामा छोडे हंकार चौषष्टि बंधनकाटार भागि
 भल छार थार कालिकार आज्ञा एतन्मंत्रद्वयमष्टो-
 तशतं मह्यं नाना विधं बंध छोडो भवति । २१ इमं
 मंत्रं पठित्वा करांगुलिमात्रया प्रहारे दत्ते द्वार-
 मुक्तो भवति । ॐ हं हं ॐ आये आये चिंविठि होलो
 बभनंदिका कालिका । अनेन मंत्रेण श्वेतसर्पपं श्वेत-
 ओठहुन पुष्पं पठित्वा प्रथम द्वारे क्षिपेत् ततः सर्व-
 द्वााराणि भंजति ॥

अथ किंचित्सुप्रयोगः ।

चौरा बाधा सरपाउधाइ बन छाडि आवनन जाउ
 सावज धइ धइ ल्याउ रामचन्द्र मारलुकुहुवावनके
 षोषहि पाइ मोरि जहां तहां कपसरे मोरे झरले
 कूठहि निर्विस होइ जाइ दुहाई रामचन्द्रके दुहाई
 गौरा पार्वतीके जो एही बन रह ॥

मन्त्र बनझारेका ।

अर्जुनः फाल्गुणो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ।
 बीभत्सुर्विजयः कृष्णः सन्ध्यासाची धनंजयः ॥
 इस मंत्रको लिखके पशुके गरे बांधे ऐतवारके
 अनुदये लौ खांग नीका होइ ॥

मन्त्र किरहा झारेका ।

चमारै बभनेकैल मिताई । ओकरेपापे परुरसाई
 सूर्य देवता साखी । जो अब रसाइरहे साखी ।

अन्यच्च ।

गङ्गापार बहुरके गाछी । झरे कीरा झरे रसाइ
ईश्वर महादेव गौरा पार्वतीके दुहाई । अर्द्धोदय
बेला सात गोटी पाहि मारे न रहे ॥

अथ गो महिष्यादि दुग्धवर्द्धन मंत्र ।

ॐ हुंकारिणी प्रसरं शीतल । अनेन मन्त्रेण तृ-
णान्याभिमन्त्र्य भोक्तुं दद्यात्पशुभ्यस्तदा बहुलं
दुग्धं भवति ॥

अथ स्त्रीणां गर्भधारणविधिः ।

वेदोक्तमंत्रः ।

विष्णुर्योनिकल्पयतुत्वष्टारूपाणिपिंशतु आसिं
व्रजंतु प्रजापतिर्द्धाता गर्भं विदधातु गर्भं धेहिसिनी
वाली गर्भं धेहि सरस्वती गर्भंते अश्विनौ देवा अध-
त्तांपुष्करस्रजौ । बांझ जो एक बार जाइ लौ गर्भ
रहै पुत्र होई पै अपने पुरुषसे न लागै बीज जो
बाहर आवै सो कुक्षिहीके शिर डारे मंत्र कुंतीका
पढे बोर तीन वा सात वा इक्कीस ३ । ७ । २१ ।

अथ मंत्र सावर ।

ॐ नमो आदेश गुरुको ॐ नमो आदेश गुरु-
को बांझिन पुत्रिनि एक बांझ मराक्ष जाति चौथी
गर्भपातिनी चारि उन्हि एकमत भय चली चली

कामरुगई कामरुदेश कामाक्षा रानीले इशमाइल
 ओगी बषानी तुह जाहु योगिके पास पूरहि तो हरि
 मनके आस इसमाइलके संग उन्ह रतिकइ आंतर
 भेटनी नावमा इनीसे भइ नाने कहा तहु चारिहु
 छिनारी कोषित निति कीन्हन देहगारी कोषिनिति
 कुंती पांच संगवेली एक द्रोपदी पांचके सहेली
 सुरज देवता साथी होहु मोरे जिवमें मा संताप
 मोहिं तजिलाने परपुरुषकेषाय एकबुंद निति अक-
 रम कीन्ह तेहिते है वंशकर चीन्ह शिववाचा ब्रह्म-
 वाचा लहुजमाउ होना दमाना भूल प्रेत दोष रोग
 जो लाख होइ तेहि जग चंडी जाउ हरिजंबीर ॥

अथ गर्भरक्षाके मंत्र ।

पानी पढदेइ बेर ७ । ॐ यलहुभावियानारी स्थिर
 गर्भापिजायते । इति मंत्रेण जलं दद्यात् ॥

अथ प्रसूतिका मंत्र ।

पानी पढ देना तुरंत बालक होई । ॐ श्रावणा
 वंचनर्मा च सुखमेव प्रसूयते । इति मंत्रेण जलं
 दधं सुखेन बालको जायते ॥

गर्भ रक्षा गंडाबंधन मंत्र ।

गंडा कटि सह बांधव हिमबंत उत्तरे कुले कीह-
 री नाम राक्षसी । तस्या रुमरणमात्रेण गर्भो भवति

अथः ॥ ॐ आथो मोथो मेरा कहा कीजिये
फलानीका गर्भ जाले राषि लीजिये गुरुकी शक्ति
मेरी शक्ति कुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

सर्वशूलके मंत्र ।

जानी पढि पिआइवा कालि कालि महा कालि नमो
स्तुते हनहन दहदह शूलं त्रिशूलैर्न हूँ फट् स्वाहा ॥

अथ बालकरक्षा । बालकक्षारिका मंत्र ।

उल्लहेष विहरतषे भगवन् श्रीनरसिंह देवं ये उरे
फलानाका भेड ताहि षोडशारसिंह षं षं षं षं षं ॥

अन्यन्त्र ।

आदि नाथ मय हरण कहहु कहवायो येही
अथ हर होयसे सावर हेल हवा बडिल भूल व्याधि
डोढि सुठि सन बांधिके आनी अह माठकन सुर-
बाहु साजि पढमने बांध विज्ञत के भैरव दोनहि
छेह आउ भैरवानन्दका कीका कोलवाल बनारसि-
के बंध बालुके कीजे हार तेहि लाने बात है ॥

अन्यन्त्र ।

शुक्र शनिश्वर भौम अवारी कहवा चलेउ डाहनि
आरी हंकिनी उंकीनि चली पुरुष देहाके बैसी पीप-
रके डार सातसे योगिनी जाने अज्ञान डोढि सुठि

बांधिके आ नगरह गाडकन सुखाय संतावै मनै-
बाह विनती पर भैरव दोनहि लैआउ ॥

अन्यच्च ।

पिल्लौराई पिल्लौलीन पिल्लौसोपनु सजांकाळां
सीडीठि अग्निपरोसे जेवे गरुड पाथरखाई भस्मत
भैजाई पत्थर शिल्लु पत्थणि पिलावरंड पिल्लपिलंग
परबत हाथ चढा बझकरो धौक लौहेको चनाचंडी
डीठि मूठि भस्मतहोइजाइ अपनी डीठि पर डीठि-
पर पीठि पाछे घालु बाटवीर हनिवन्त तेरी शक्ति॥

गंडा बालकरक्षाके विधि करव ।

कुआरकिन्याका काता मूल तेरह ताम कच्चा
घोंघा मह ओनइस १९ चाउर बासमतीके रांधिके
भात पिआईव मूलक गंडापुरि बांधि गरे ॥

मंत्र घोंघारक्षक ।

घोंघा घोंघा समुद्र घोंघासमुद्रके कितजानि
जानहु घोंघा जनि जरु मूल जरैतो पारवती केश
आचर जरे तो महादेवके जटा जरै ॥

मंत्र गंडापूरेका ।

ॐ आसन योगी कपूत जंबीरीके पास न बौड़
श्रवरी गैकरीर कलमासुकी सानी बिआरी जेहिसे

बाँधौ बाँधिके जडाव धषधीकजाइ कावरूके बिद्या
कामाक्षा जलविधि नाथ गुरु गोरखनाथ रक्षपाल ।

मंत्र पानीफूँकि पिआवेका ।

पानी तीन पानी ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जानी शिव
शक्ति आदि कुमारी अब छार भार सब तोही की
ताइ कहहु कतहुं का होउ धैले आउ बालकके तौके
मौके पुण्य जब होय महादेवके जटा परे पार्वतीके
आँचर जौ यह बालक दुःख पावै ॥

बालक झारनेका मंत्र ।

शंकर यशसामी केशरि ललित केशरि पञ्चमि
वारुणि भूकटेन कुटौकार हंत विकारौ तैंतिस कोटि
भूत भीमदेव संधारी भीम बालकके छरुं अह कह
बालकके ससुखना चोटो खाजौ मोरा कोषे गरुड
कंठे समुद्रतीर गिंधिनिउ आवथरोष भस्मत होइ
जाइ ठौर भक्षिनी स्वाहा सुआक्ष स्त्रीके नाभीके हेत
ओनिके अपर माक्षी जलले मारि राखि ओहि ठहर
तब मंत्र पढिके फूके माक्षी जिये बालक चंगा हो
मरै न कबहि ॥ यह प्रयोग गर्भघातिनहुंके करे जौ
अच्छा होय ॥

अथ मक्षिकासजीवनी मंत्र ।

आवण इस मंत्रसे सुई माछी जिये ।

अथ प्रेत चढानेका मंत्र ।

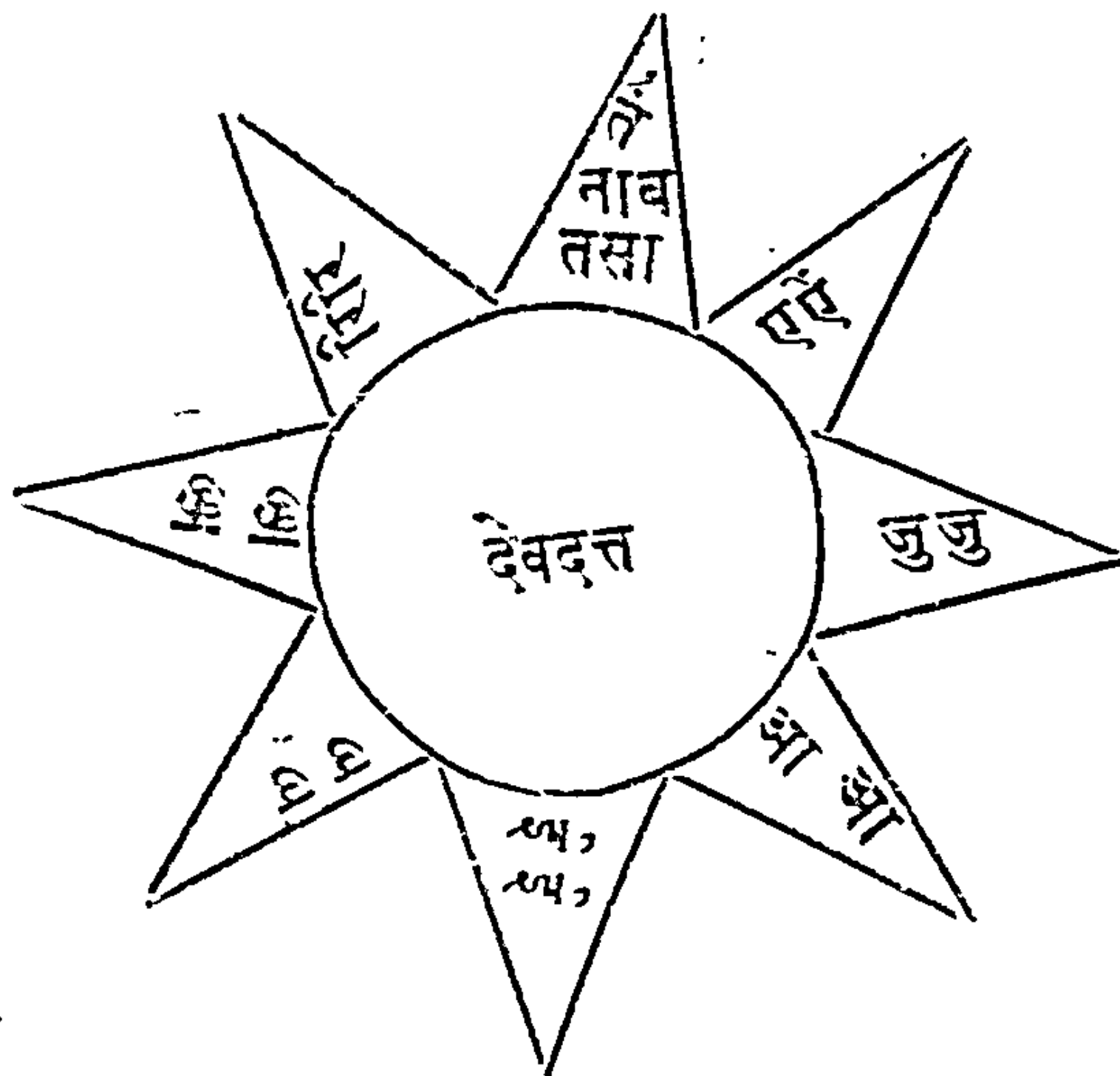
अल्प गुरु अल्प रहमान । उसकी छाती चढ
शैतान उसकी छाती न चढै तौ मा बहिनकी सेजपै
जग धरै अलीकी दुहाई ॥ ३ ॥

रात्रीमें शुक्रके दिनसे आरंभ करे पहले महीसे
गोल चौका लगावे । उसके ऊपर उत्तरकी तरफ
तिल और तेलका दीपक धरै और आप दक्षिणको
मुख करके बैठे । सुपेद फूल और रेवड़ी रखै लोवा
नकी धूप देके १७००० हजार जप करै । इस तरह
करके वोह शीरीनी करे लडकेको देदनी चाहिये ।
तौ स्वप्नमें वर पावगा ॥

१००० जप रात्रीमें करनेसे शत्रुके ऊपर शैतान
चढेगा । १०८ नित्य जप करनेसे यह मंत्र सिद्ध
रहता है । अगर शैतानको उतारना होय तौ गेहूंकी
रोटी बनाके एक तरफ घीसे चुपडै और एक
गुडकी भेली उसके ऊपर धरके दरियावमें बहादे
तौ शैतान उतर जायगा ॥

१ जिसके ऊपर मंत्र चलाना हो उसका ध्यान करे और नाम लेना
चाहिये । २ अलीकी दुहाई ३ वार देनी चाहिये ।

मोहिनी यंत्र ।



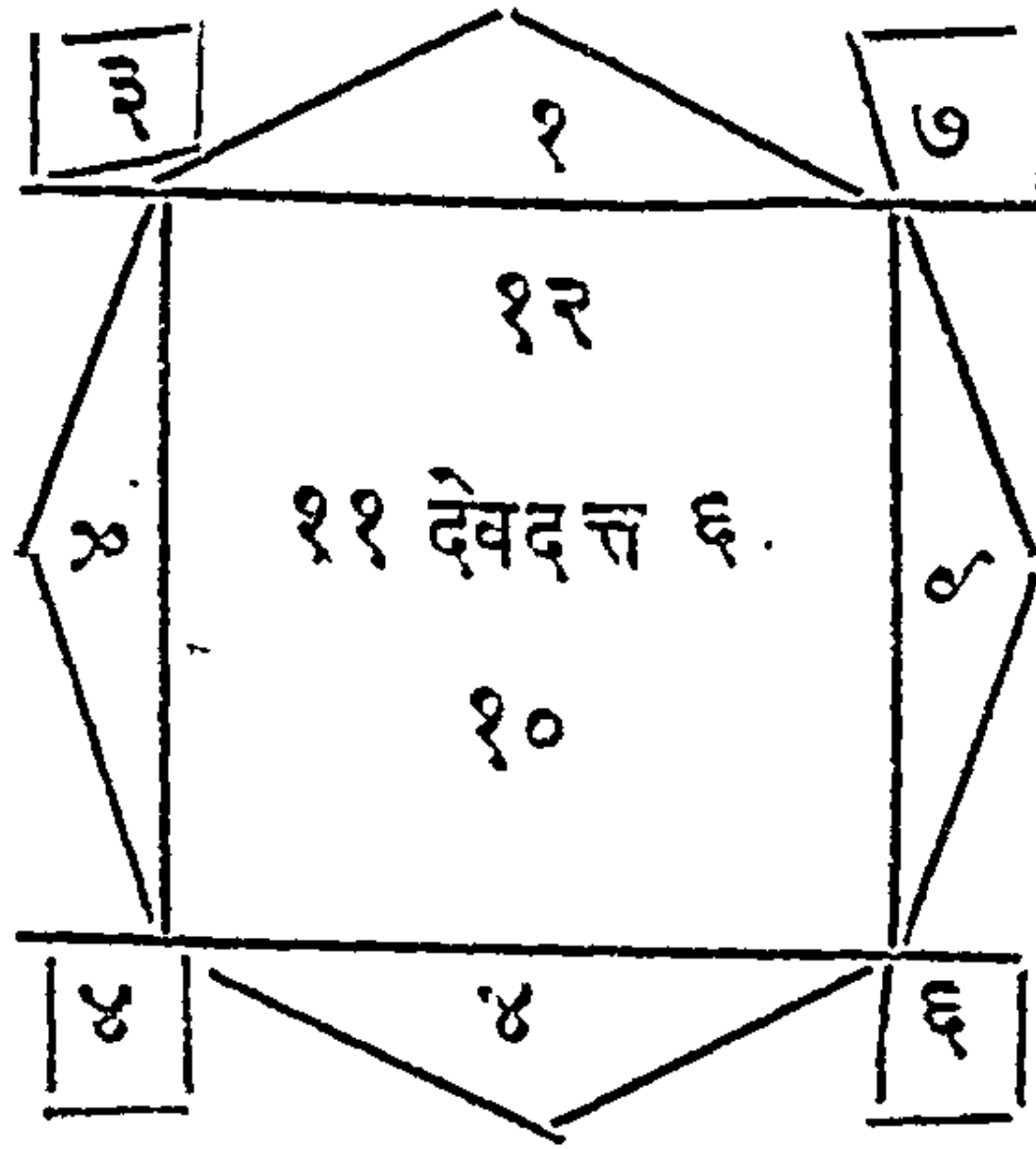
इस यंत्रको भोजपत्रके ऊपर हरतालसे लिखे जाहे जिस कलमसे । उसका पूजन करे । फिर शत्रुके नाम प्रतिष्ठा करै फिर कन्याके काते हुए सूत्रसे लपेटकर भूमिमें गाडदे तिसपर बैठके नित्य कुछा दतौनसे करै । तदनन्तर ७ छाल मारै जब तक काम सिद्ध न हो तबतक ऐसाही करै ।

शत्रुकी छाती फटनेका यंत्र ।

२०	२७	२	८
७	३	२४	२३
२६	२१	९	१
४	६	२२	२५

इस यंत्रको बकरेके रुधिरसे लिखकर धोबीके पटलेके नीचे गाडदे । ऐसा करनेसे शत्रुकी छाती फटा करेगी ।

शत्रुज्वरयंत्र ।



इस यंत्रको कोरे ठीकरेके ऊपर लिखके पुस्तके ऊपर शत्रुका नाम लिखे और अग्निमें डालहे तौ शत्रु को ज्वर आवैगा । और जब अग्निमेंसे निकाला जायगा तब ज्वर उतर जायगा ।

अथ ज्वरमंत्र ।

ॐ ह्रां ह्रां ह्रीं सुग्रीवाय महाबलपराक्रमाय
सूर्यपुत्राय अमिततेजसे एकाहिक व्याहिक त्र्या-
हिक चातुर्थिक महाज्वर भूतज्वर प्रेतज्वर महाबारी
बानर ज्वराणां बन्ध ह्रां ह्रीं फट् स्वाहा ॥

इस मंत्रसे २१ बार झाडा देनेसे सब प्रकारका ज्वर दूर होता है ॥

गर्भस्तम्भन मंत्र ।

ॐ नमो गंगाउकारे गोरखबहाधोरघीपार
गोरख बेटा जाय जय हुत पूत ईश्वरकी माया ॥

इस मंत्रसे अभिमंत्रित करके कारी कन्याके
कान्ते हुए सूतका गंडा बनाके पहरा देनेसे गिरता
हुआ रुधिर बन्द हो जायगा ॥

भूतनाशन मंत्र ।

ॐ नमो काली कपाली दही २ स्वाहा ॥

इस मंत्रसे १०८ बार तेल लगानेसे भूत पुकार
उठेगा ॥

ढाकनी नजर दूर करनेका मंत्र ।

ॐ नमो नारासिंह पांडिहार भस्मना योगनी बंध
ढाकनी बंध चौरासी दोष बंध अष्टोत्तरशत व्याधी
बंध खेही २ मेही २ मारे २ सोखे २ ज्वल २
प्रज्वल २ नारासिंह बोरकी शक्ति पुरी ॥

इस मंत्रको १०८ बार पढ़ २ के झाडा देनेसे
ढाकनीकी नजर दूर होती है ॥

अथ उच्चाटन ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मसान । ॐ हं लीं श्रीं ह्रीं ॐ
शुभ्र ॐ हं लीं हं लीं हं लीं राजा वरयः । ॐ ह्रीं
ह्रीं ॐ लक्ष्म्यै । ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ॐ पुत्रः हतीः ।
ॐ ह्रीं श्रीं हं लीं ॥

इस प्रकार उक्त मन्त्रको भोज पत्रके ऊपर
करतूरी केसरसे लिखै तौ कार्य सिद्ध होय ॥

सुख प्रसव यंत्र ॥

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

इस यंत्रको थालीमें लिखकर गर्भवती स्त्रीको
दिखाता रहे सुखसे सन्तान उत्पन्न होगी ॥

राक्षसनाशनमंत्र ।

ॐ ठं ठां ठिं ठीं हुं हूं हें हैं ठों ठौं ठं ठः अमुकं हुं ॥

इस मंत्रसे झाडा देनेसे राक्षस उन्माद दूर होगा ।

भसान मंत्र ।

सपेदा भसान गुरु गोरखकी आन अमदण्ड
भसान काल भैरोंकी आन सुक्रिया भसान बुनिया
चमारीकी आन फुलिया भसान गोर भैरोंकी आन
हलदिया भसान ककोडा भैरोंकी आन पीलिया
भसान दिल्लीकी जोरानीकी आन कसेदिया भसान
कालकाकी आन कीकडिया भसान रामचन्द्रकी
आन मिचमिचिया भसान शिवशंकरकी आन
सिलसिलिया भसान वीर मोहम्मदापीरकी आन ॥

इतने मसानके नाम हैं । इनसे झाडा दे तो
मसानकी बाधा दूर होगी ॥

मंत्रप्रयोग ।

सतनाम आदेश गुरुकी आदेश पवन पानीका
नाह अनाहद दुंदुभी बाजै जहां बैठी जोग माया
साजै चौसठ जोगनी बावन बीर बालककी हरै सब
पीर आठो जात हीतला जानिये बंध २ बार जात
मसान भूत बन्ध प्रेत बन्ध छल बन्ध छिद्र बन्ध सब-
को मारकर मसमन्त सतनाम आदेश गुरुकी ॥

इस मंत्रको ग्रहणमें १०८ बार जपके सिद्ध
कर लेना चाहिये । इस सिद्ध किये हुए मन्त्रसे
झाडा देनेसे सब प्रकारकी बाधा दूर होती है ॥

शिरका दर्द झाड़नेका मंत्र ।

सुरमायके गर्भमें उपजा बच्छा बच्छेके पेटमें
कच्छा कच्छेके पेटमें उपजा कालजाः कालजा कहै
मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरी मंत्र ईश्वरीवाच
महादेवकी आज्ञा फुरी ॥

इस मंत्रसे २१ बार शिरमें झाडा देनेसे शिरकी
पीडा दूर होगी ॥

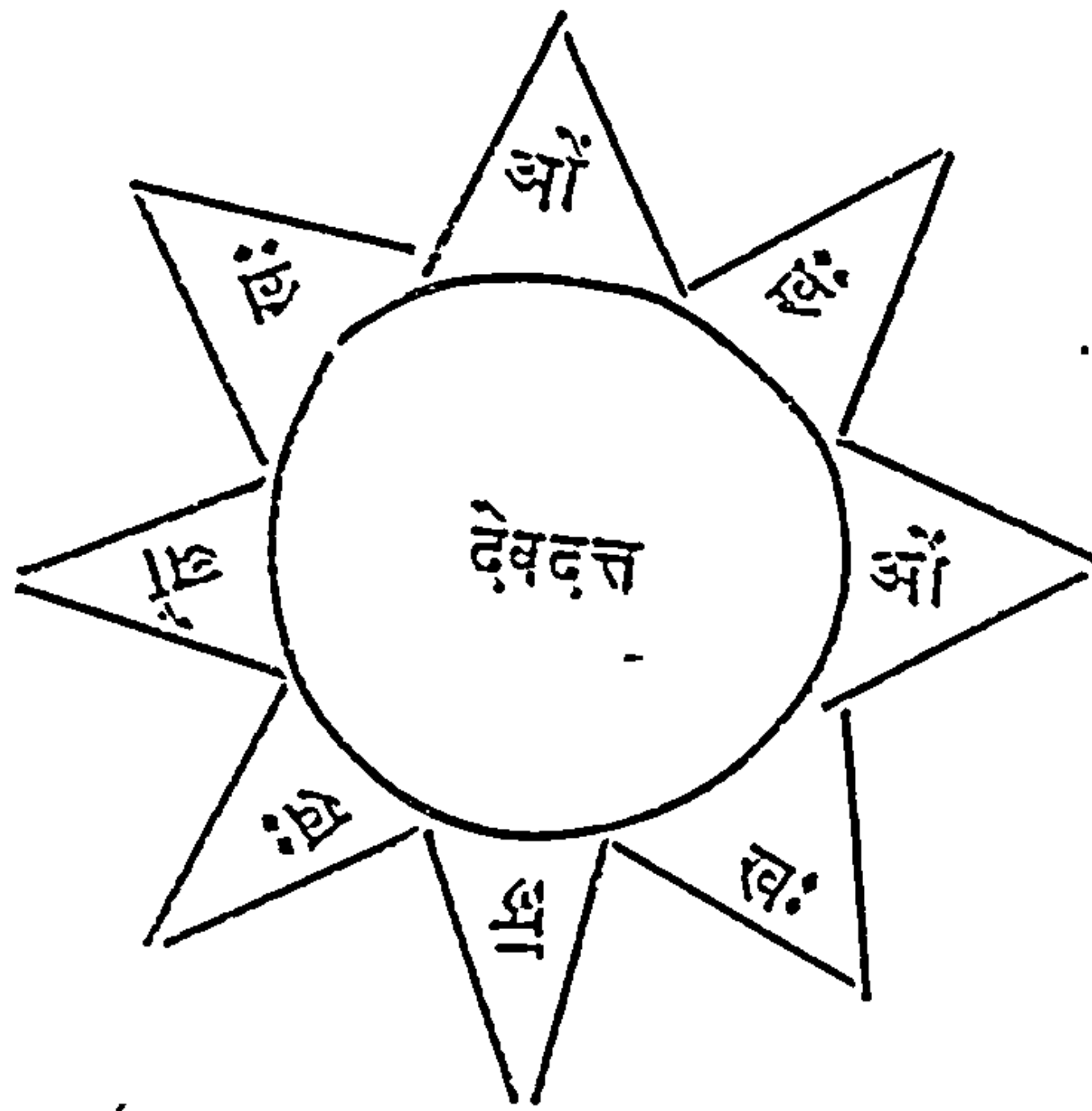
मनोरथसिद्धिमंत्र ।

ॐ हर त्रिपुर हर भवानी वाला राजा प्रजा

मोहनी सर्वं शत्रु विध्वंसनी मम चिन्तितं फलं देहि
देहि सुवर्णेश्वरी स्वाहा ॥

इस मन्त्रको पवित्रताके साथ १०८ बार जप-
नसे सिद्धि होजाती है ॥

शत्रुमोहनीयंत्र ।



इस यंत्रको रक्तचन्दनसे भोजपत्रपर लिखकर
पूजन और प्रतिष्ठा करे पश्चात् सहलमें धरे तो शत्रु
संमोहित हो निश्चय वश्य हो ॥

सब प्रकारके रोग दूर होनेका यंत्र ।

इस यंत्रको भोजपत्रके ऊपर लिख-
के बालकके गलेमें बांध देनेसे सब
प्रकारकी बाधा दूर होती है ॥

२३	२२	२७
२३	२३	२७
२७	२६	२७

काममन्त्रः ।

तत्राहौ काममन्त्रोद्धारः ।

महमहमहमाहौ मादयेति द्विवारं
तदनु च खिलनीयं सौख्यदं वीं च तस्मात् ॥
अथ च पदमुपान्ते नामरूपादिसंज्ञा ।
भवति महनमन्त्रः स्वाहयासंयुतोऽयम् ॥ १ ॥

अथ काममन्त्रः ।

मह मह मह मादय मादय खिल वीं असुक
नाम्नी असुकरस्वरूपां स्वाहा ॥

अथ ध्यानम् ।

कनकरुचिरमूर्तिः कुन्दपुष्पाकृतिर्वै
शुवतिहृदयमध्ये निरिचितादत्तदृष्टिः ।
इतिमनसि मनोजं ध्याययेद्यो जपस्थो
वशयति च समस्तं भूतलं मन्त्रसिद्धः ॥ १ ॥
सुवर्णकी समान जिसकी सुन्दर मूर्ति है कुन्दके
फूलकी नाइ सपेद और स्त्रियोंके हृदयके विषे
जिसने दृष्टि लगा रखी है इस प्रकार जो कामदेव-
का ध्यान करता है उसके सब वशमें होते हैं ॥
शतशतपरिजापात् स्यादयं सिद्धिदाता
दशशतकुसुमानां लोहितानां च होमात् ।

इह तु सकलकार्यं वायुहस्तेन कार्य-

मुपदिशति समासाज्ज्योतिरीशस्वरूपा ॥

१०००० जप करके दशांश १००० होम करै ।
होम लाल फूलोंसे करे। इसमें सब काम बांये हाथसे
करना चाहिये ॥

चासुण्डामंत्रोच्चारः ।

चासुण्डे प्रथमे जपे च कथितं जूमे तथा मोहये
ज्ञातव्यं वशमानयेत्यपि षट् साध्यं च द्वीपाश्रुतम् ।
स्वाहान्तः प्रणवादिरेष कथितस्तर्कै ०००० हनः
सन्मंत्रः कविसार्थसेवितपदो न स्याद्वितीयो भुवि ॥

चासुण्डामन्त्रः ।

ॐ चासुण्डे जूमे मोहये वशमानय स्वाहा ॥

चासुण्डाध्यानम् ।

दंष्ट्राकोटिपिशंकटा सुवदना सान्द्रान्धकारे स्थिता
खट्वांगासितसूढदेच्छितकरा वामेशयासंशिरः ।

इयामा पिङ्गलसूर्यजा भयकरा शार्दूलचर्मस्वरा
चासुण्डाशयवाहिनी जपविधौ ध्यया सदा साधकैः ॥

करोड़ों डाढ़ोंसे विकराल सुन्दर मुखवाली महा
अँधेरेमें स्थित ऐसी खाटपर बैठी हाथमें तलवार
लिये काली और भूरे बालवाली भय देनेवाली
मूलकके ऊपर स्थित ऐसी चासुण्डाका ध्यान करै ॥

विधिः ।

जप्या लक्षमसौ पलाशकुसुमैरग्रैर्दशांशं हुतं
सिद्धिं गच्छति वा सकर्मविधिना निःसंशयं मंत्रजा ।
पुष्पं सप्तनिधानमंत्रणकृतं नूनं ददत्त्यादरा-
त्तत्तद्भागवतीं करोतु वशगामित्याह वागीश्वरः ॥

इस मन्त्रको एकलक्ष १००००० जपे । दशांश
अर्थात् १०००० होम करे । होम पलाशके फूलोंसे
करना चाहिये । होम करते समय एक २ पुष्पको
सात २ बार अभिसंज्ञित करके होम करना चाहिये
जिसको वश करना होय उसका ध्यान करे अवश्य
सिद्धि होगी ॥

कामेश्वरमन्त्रोद्धारः ।

आदौ कामपदं ततो निगदितं संबोधने देवहि
प्रोक्तं कर्मपदान्वितं मृगदृशां नाम स्फुटं निर्दिशेत् ।
तस्मादानयतां ततो मम पदं ज्ञेयं पदं चेत्यतोऽप्यो
द्धारान्वितहीमिति प्रकटितो मन्त्रो मया मान्मथः ॥

कामेश्वरमंत्रः ।

कामदेवासुर्कीमानय मम पदं वशं च ।

अथ ध्यानम् ।

आकर्णाञ्चितकार्मुको हरपदे धुन्वन् हरं सायकै-
र्मानोमण्डलमध्यागो दयितया सानन्दमालिङ्गितः ।

मत्थालीढपदो जपानिभतनुर्भग्नः परेतासनः
कन्दर्पो जयकर्मणि प्रतिदिनं ध्येयो नरैरीदृशः ॥

कर्णताई जिसने धनुष खेंच रक्खा है और
महादेवके ऊपर अपन बाणोंका प्रहार करनेवाला
सूयके मण्डलमें विराजमान और रति नामकी जो
कामदेवकी स्त्री तिसकरके आलिंगन करा हुआ
और जपाके पुष्पकी समान जिसका देह है और
मृतकोंके आसनवाला ऐसे कामदेवका जयकाममें
ध्यान करना ॥

अथ विधिः ।

जप्त्वा भावयुतं कदम्बकुसुमं पुष्पं पलाशस्य वा
हुत्वा पञ्चसहस्रमेति नियतं सर्वं मनोवाञ्छितम् ॥
ताम्बूलं कुसुमं सुगन्धमथवा वस्त्रं प्रदत्त्वाथवा
सप्तावर्तितमेव सिद्धिसहिता कामं जगन्मोहयेत् ॥

ऊपर लिखे मंत्रको शुद्धभावसे ६००० जपे ।
और दशांश ६०० होम करे । होम पलाशके फूलोंसे
तथा कदम्बके फूलोंसे होम करे तो सिद्धि होती है
और यदि पान या फूल अथवा और कुछ सुगन्धित

वस्तु इनका होम करे और इस प्रकार ७ बार करे
तौ संसारभी वशमें अवश्य होगा ॥

स्थाननिर्णयः ।

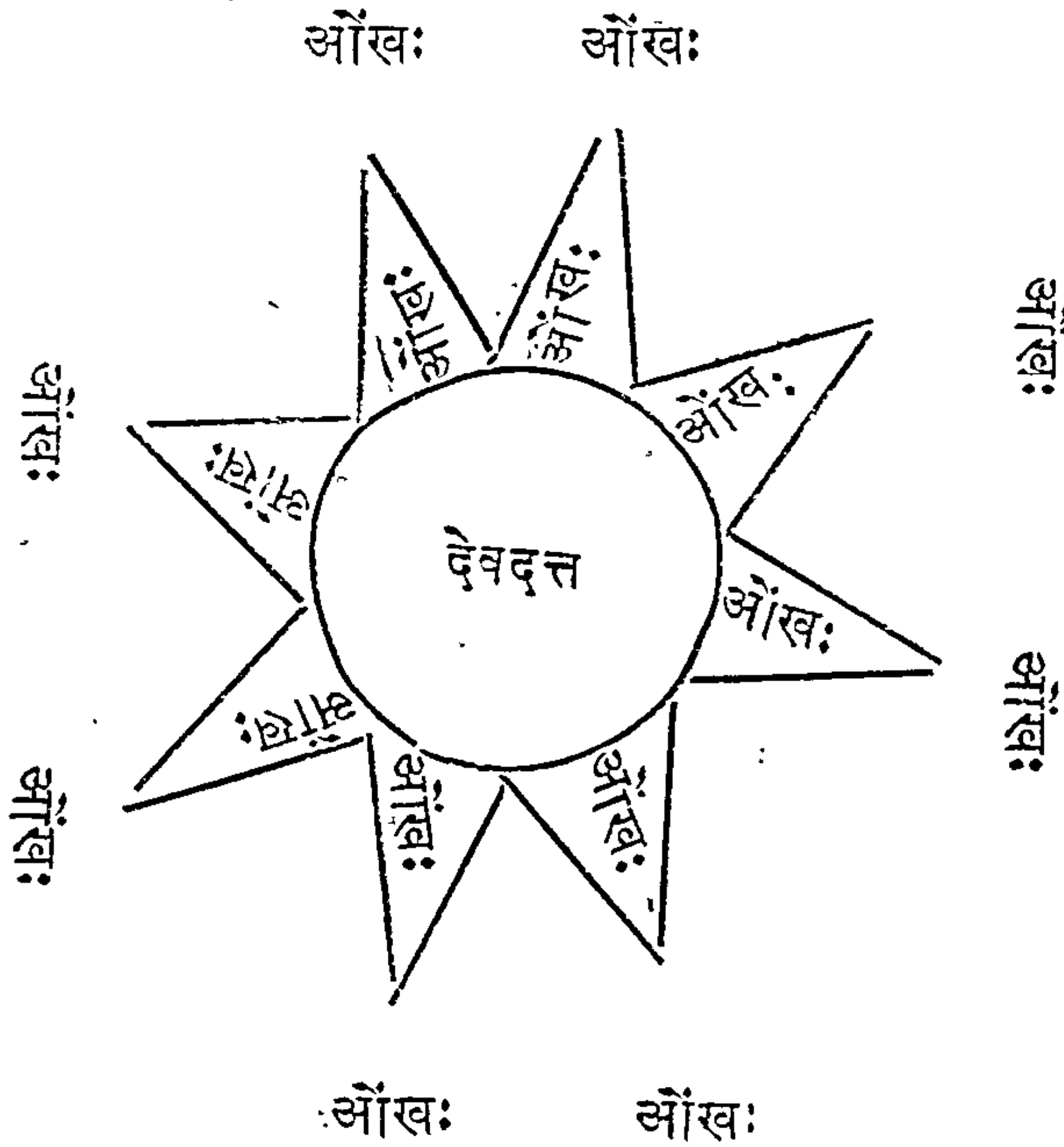
शम्भोरायतने चतुष्पथतटे नद्यां स्मशाने गिरौ
मध्ये मन्त्रवरः करोति वशगामष्टौ महासिद्ध्यः ।
वश्याकर्षणमोहमन्मथमनःस्तम्भादयो हस्तगाः
प्रायःप्राकृतसिद्ध्यश्च वशगाःप्राप्याःकवित्वादयः॥

महादेवके मठ अथवा चौराहेके बीच अथवा
नदीके किनारे अथवा स्मशानके विषे इनमेंसे
किसी एक स्थानमें बैठकर जप करनेसे सब काम
सिद्धि होय । वशीकरण होता है, आकर्षण होता है
तथा मोहनभी होता है । विशेष क्या कहें यदि
भली प्रकार सिद्धि किया जाय तो इस मंत्रसे
वाक्यसिद्धितक हो जाती है॥

वशीकरणप्रयोग ।

नीचे लिखे मंत्रको भोजपत्रपर गोरोचनसे लिखे
पूजन करे पुष्प चढ़ावे और फिर शहतमें धर दोगे
तो शत्रु वशीभूत होगा ॥

यंत्र ।



प्रेतविमोचनविधि ।

नीचे लिखे यंत्रको कागजपर स्याहीसे लिखना
फेर उसे रुईमें लपेटके घृतमें भिगोकर चौका (ज
मीन लीपना) देकर (चौका एक बालिस्त भर जगह
में लगाना) उस बत्तीका इस चौकेमें दीपक जलाना
और फेर रोगी (जिसपर प्रेत चढ़ाहै) के सन्मुख
दीपकको बुझा दो और फेर उसको दिखाके बालुहो
(प्रयोजन यह है कि रोगी देखता रहे) ऐसा कर
नेसे प्रेत छोड़कर भाग जावेगा यदि पुरुषको प्रेत

चढ़ा हो तो ऊपर नाम स्त्रीका लिखना यदि स्त्रीको
प्रेत चढ़ा हो तो ऊपर नाम पुरुषका और नीचे
स्त्रीका लिखना प्रयोजन यह है कि जिस पुरुषको
जो प्रेत स्त्री हो तो उस रोगी पुरुषका नाम नीचे
और प्रेतरूपिणी स्त्रीका नाम ऊपर यदि स्त्रीको
पुरुष प्रेत हो तो स्त्रीका नाम नीचे और प्रेत पुरु-
षका नाम ऊपर लिखो ऐसा कर यंत्रमें शेष पूव-
वत् करके दिखानेसे प्रेत भागेगा ॥

प्रेतविमोचनबुधुनयत ।

यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः
यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः
यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः
यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः
यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः
यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः
यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः	यःबुधुः

इस यंत्रको जुमेके दिन यदि गलेमें बांधे तो फिर
सुकहसामें जीत होती है अर्थात् अपराधी छूटता है
परंतु नीचे उसका और उसकी माताका नाम लिखे ।

यंत्र ।

३४	३३८	३३३	या हाफीज
३३८	३३२	३३३	या हाफीज
३३६	३३७	३३७	९९
या हाफीज	या हाफीज	९९	॥

१६	२	सुवार
२	५११	हो
अज	कुंन	मलमा

इस यंत्रको धोकर
पीनेसे पेटका दर्द तत्काल
आराम होगा ॥

१	४	४४	८
४४	७	२	४४
४	४२	४४	४
४८	४	५	४४

यह यंत्र दोनों प्रकारकी बवासी-
रको नाश करता है ॥

१४	१४	७९	४
१८	७	१२	१७
८	११	१४	१२
१६	१०	९	१०

इस यंत्रको जिसके मसाणका
रोग हो उसके बांधो ॥

१४	१४	१४	१४
१४	१४	१४	१४
१४	१४	१४	१४
१४	१४	१४	१४

यह यंत्र जिसके दरवाजेपर गाह
दिया जावे वहां कलह हो ॥

३	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

इस यंत्रको बांधनेसे ऊपर बासियोंका भय नहीं रहता जो प्रायः स्त्रियोंको हुआ करता है ॥

दाढ़के दर्दका मंत्र ।

ॐ नमो आचाय नूनाय स्वाहा ॥

प्रथम इस मंत्रको कागजपर लिखकर कील मध्यका यकारपर गाड़ दो और जिस मनुष्यकी दाढ़ दुखती हो उससे कहो कि यदि तुम्हारी दाहिनी (सीधी) दाढ़ दुखती हो तब बायें हाथकी अंगुली अंगूठेसे पकड़ लो यदि बाईं दाढ़ दुखती हो तब सीधे हाथसे पकड़ो और तुम इस मंत्रको सातबार पढ़कर फेर उस कीलको ठोक दो और रोगीसे कहो कि वह थूक दे (जमीनमें) और फेरभी इसी प्रकार करो सात बार तक निश्चय दाढ़का दर्द जावेगा ॥

नीचे लिखे इस यंत्रको जिसके शीतला निकली

१	२१६९	११	८
१२	७	२	१२६८
६	९	३१७१	३
३१७	४	५	१०

हों बाजू (दण्डहस्त) में बांध दो तब विशेष जोर नहीं करेंगी यंत्र यह है ॥

